بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 08

राह-ए-ईमान

अगस्त
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 28.6.2024).....8
7. ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु व जीवन की आस्था का महत्त्व.....12
8. मुसलमान को काफिर कहने वालों को जवाब.....21
9. सामान्य ज्ञान.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

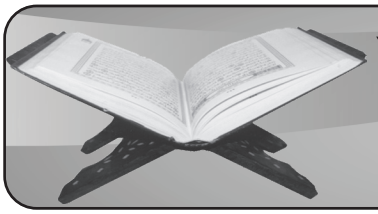

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवादः- 57-और वे लोग जो अल्लाह तथा उस के रसूल को एवं मोमिनों को अपना सहायक बनाते हैं वे (समझ लें कि) अल्लाह का गिरोह निश्चय ही ग़ालिब (होकर रहने वाला) है।

58-हे ईमान लाने वालो ! जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई थी उन्हें तथा दूसरे इन्कार करने वालों को अपना सहायक न बनाओ, जिन्होंने तुम्हारे धर्म को हँसी और खेल बना रखा है। यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह के लिए संयम धारण करो।

59-और जब तुम लोगों को नमाज़ के लिए बुलाते हो तो वे उसे हँसी और खेल (का विषय) बना लेते हैं। यह (बात उन में) इस कारण पाई जाती है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

(अल माइदा : 57-58-59)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवादः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में निवास के दौरान ज़ुहर और असर, मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा (इकट्ठी) कर के पढ़ाईं हालांकि न उस दिन बारिश हो रही थी और न किसी प्रकार का भय और जोखिम था। लोगों ने इब्ने अब्बास से पूछा आख़िर नमाज़ें जमा करके पढ़ाने का उद्देश्य क्या था? इब्ने अब्बास ने जवाब दिया कि हुज़ूर का मकसद यह था कि ज़रूरत के समय उम्मत को किसी मुश्किल या हर्ज का सामना न करना पड़े। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

अनुवादः हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद बताते हैं कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ में हम ने महसूस किया कि कोई कमी-बेशी हुई है। नमाज़ के बाद हमने निवेदन किया हुज़ूर! नमाज़ के बारे में कोई नई हिदायत नाज़िल हुई है क्या? हुज़ूर ने फरमाया क्यों क्या बात है? हम ने कहा कि हुज़ूर ने अभी इस तरह नमाज़ पढ़ाई है। आपने फरमाया: मैं भी इंसान हूँ जिस तरह तुम भूलते हो इसी तरह मैं भी भूल सकता हूँ। जब तुम में से कोई नमाज़ भूल जाए तो दो सजदा सह्व कर ले। फिर आप ने क़िबला की ओर मुख करके दो सजदे किए। (अहमद जिल्द 1 पृष्ठ 224)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मुर्शिद और मुरीद (धर्मगुरू और अनुयायी) के पारस्परिक सम्बन्ध

मुर्शिद और मुरीद (धर्मगुरू और अनुयायी) के पारस्परिक सम्बन्ध गुरू और शिष्य के उदाहरण से समझ लेने चाहिए। जैसे शिष्य गुरू से लाभ उठाता है उसी तरह मुरीद अपने मुर्शिद से लाभ उठाता है। लेकिन शिष्य अगर गुरू से सम्बन्ध तो रखे मगर अपनी सीख और शिक्षा में क़दम आगे न बढ़ाए तो वह फ़ायदा नहीं उठा सकता। यही हाल मुरीद का है। इसलिए इस सिलसिला से नाता जोड़कर अपने ज्ञान एवं अध्यात्म को बढ़ाना चाहिए। सत्याभिलाषी को एक स्थान पर पहुँचकर कदापि नहीं ठहरना चाहिए वर्ना शैतान उसे दूसरी तरफ़ लगा देगा, और जिस तरह ठहरे हुए पानी में सड़न और बदबू पैदा हो जाती है उसी तरह उसमें भी ख़राबी की दुर्गन्ध आने लगेगी। इसी तरह यदि मोमिन अपनी तरक़्क़ी के लिए कोशिश न करे तो वह गिर जाता है। इसलिए नेक आदमी का फ़र्ज़ है कि वह धार्मिक सच्चाइयों की जिज्ञासा में लगा रहे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर कोई उत्कृष्ट और गौरवशाली इन्सान दुनिया में नहीं गुज़रा। लेकिन उन्हें भी "रब्बे ज़िद्नी इल्मा" (सूरः ताहा आयत नं. 115) की दुआ करने का आदेश दिया गया था। फिर और कौन है जो अपने ज्ञान और अध्यात्म पर भरोसा करके एक जगह ठहर जाए और आगे तरक़्क़ी की ज़रूरत न समझे। ज्यों-ज्यों इन्सान अपने ज्ञान एवं अध्यात्म में तरक़्क़ी करेगा उसे ज्ञात होता जाएगा कि अभी बहुत सी बातें हलयोग्य हैं, कई विषयों को प्रथम दृष्टया (उस बच्चे की तरह जो रेखागणित की आकृतियों को पूर्णतः व्यर्थ समझता है) बिल्कुल व्यर्थ समझते थे, लेकिन अन्ततः वही सच्ची बातों के रूप में उनको नज़र आए। इसलिए कितना आवश्यक है कि अपने तौर-तरीक़ों (आचरण) को बदलने के साथ ही ज्ञान को बढ़ाने के लिए हर बात की गहराई तक पहुँचा जाए। तुमने बहुत सी बेतुकी (अप्रासंगिक) बातों को छोड़कर इस सिलसिला को क़ुबूल किया है। अगर तुम इसके बारे में पूरा ज्ञान और फ़लसफ़ा (दर्शन) हासिल नहीं करोगे तो इस से तुम्हें क्या फ़ायदा हुआ। तुम्हारे विश्वास और बोध (ज्ञान) में दृढ़ता कैसे पैदा होगी। छोटी-छोटी बातों पर शक और सन्देह पैदा होंगे, फिर क़दम डगमगाने का ख़तरा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

★ ★ ★

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

और मुझे आश्चर्य है कि तुम इस पुस्तक को लिखने पर तत्पर क्यों हुए और तुम ने इसमें कौन सी अनुपम और अनोखी बात लिखी है बल्कि तुम ने इसमें केवल बेकार लोगों का बचा-कुचा एकत्र कर दिया है और मूर्खों की मूर्खतापूर्ण बातों का अनुकरण किया है तथा इन बातों के अतिरिक्त तूने कुछ नहीं कहा जो पहले की जा चुकी हैं और तेरी मूर्खता से भी बढ़कर मूर्खता के ताने-बाने बुने थे और तूने स्वयं कुछ नहीं कहा बल्कि मूर्खों का सामान चुराया है। और हम तेरे कलाम में ऐसी ही इबारत देखते हैं जिसकी गंध सड़ी हुई मछलियों और बदबूदार मुर्दार की दुर्गन्ध की तरह महसूस करते हैं और उसे हम तुच्छ और व्यर्थ दिखावा और हंसने वालों की हंसी के सामान से भरा हुआ पाते हैं। और यह सब कुछ तुमने लालची की भांति मस्जिदों की रोटियों तथा लोगों की खुशी प्राप्त करने के लिए किया है न कि समस्त लोकों के रब्ब के लिए। हे वह व्यक्ति जिसने सच को छोड़ा और झूठ से काम लिया, तूने फुर्कान-ए-हमीद को पीठ के पीछे डाल दिया और बकवास के अतिरिक्त तू कुछ नहीं जानता और अंधों की भांति चलता है। झूठ के मार्गों पर चलने तथा बुराई के विभिन्न कूचों में सरपट दौड़ने के अतिरिक्त तू कुछ नहीं जानता। तुझे शेर के पंजों का डर नहीं और तू अंधों एवं कानों की तरह दौड़ता-फिरता है। हम ने तेरे अंधकारों का पर्दा फाड़ दिया है और तेरे कलाम को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। और तुझे शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा। क्या तू एक निर्लज्ज मुर्ख व्यक्ति के समान मसीह के जीवित रहने पर ईमान रखता है तथा यह विचार रखता है कि जैसे वह (मसीह) मुर्दों से अलग हैं। तुम ने इस पर स्पष्ट और सुदृढ़ तथा न ही सरवरे कायनात (मुहम्मद स.अ.व.) की निरन्तरता वाली हदीसों से कोई सबूत प्रस्तुत किया। अत: हे झूठ के पुतले तूने अपने दावे को सिद्ध करने में झूठ से काम लिया और फिक: के सिद्धान्त से दूर हट गया। हे निपट मूर्ख, जल्दबाज़, दोषी, निन्दित मनुष्य! रुक और गंभीरता एवं बुध्दि से विचार कर! कि तूने मसीह के जीवित रहने के दावे पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया तथा तूने केवल कल्पनाओं बल्कि भ्रमों का अनुकरण किया है। जटिल विषयों का परिणाम (सुग़रा-कुब्रा) मुक़द्दमों से अधिक नहीं होता। जब मुक़द्दमा सुग़रा और कुब्रा काल्पनिक हों तो उनका परिणाम भी काल्पनिक होगा जैसा कि विवेकवानों से छिपा हुआ नहीं। यदि तू उन बारीकियों को समझ नहीं पाता और तुझे उन वास्तविकताओं की समझ नहीं। तो उत्तम प्रतिभा एवं गहरा विवेक रखने वालों से पूछ! यदि तू अपनी करतूतों को अपनी आंख से नहीं देख सकता तो दूसरों की आंख से देख और यदि तू मूसलाधार वर्षा से वंचित है तो दूसरों के बादलों से वर्षा की मांग कर। हे दरिद्र! क्या तू नहीं जानता कि तेरा कथन क़ुर्आन के स्पष्ट सबूतों का विरोधी तथा फुर्कान (हमीद) के सुदृढ़ आदेशों का विरोधी है। 'तवफ्फी' के

अर्थ इन्सानों और जिन्नों के सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आप के बुद्धिमान एवं अध्यात्म ज्ञानी सहाबा की ज़बान से स्पष्ट तौर पर वर्णन हो चुके हैं तो फिर खैरुल अनाम (सृष्टि के सर्वोत्तम) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्पष्ट अर्थों के सामने लोगों के अर्थों की क्या हैसियत रह जाती है और पापियों के अतिरिक्त इन अर्थों का कौन इन्कार कर सकता है।

अत: तुम्हें शर्म आनी चाहिए जो तूने अल्लाह और उसके स्पष्ट आदेशों के बारे में लापरवाही की है तथा क़ुर्आन के अस्पष्ट आदेशों का अनुसरण किया है और सुदृढ़ आदेशों से मुंह फेर लिया है। तू बेलगाम की भांति आक्रमणकारी हुआ, तूने मूर्तिपूजकों की तरह सच को त्याग दिया है। मैंने यदा-कदा तेरी पुस्तक को देखा है और उसे एक गाने वाली (गायिका) के समान नाचते हुए पाया है। और ख़ुदा की क़सम वह पुस्तक सच्चाई से ख़ाली है और दज्जाल के कपटों से भरी हुई है। इसलिए यह तुझ पर अनिवार्य है कि तू तुरन्त उस राशि को नक़द अदा करे, ताकि हम तेरा झूठ तुझ पर प्रकट कर दें और तुझे इब्रत (सीख) के स्थान तक पहुंचाएं और तुझ पर यह भी अनिवार्य है कि तू अपने माल को ऐसे अमीन (अमानतदार) के पास जमा कराए जो निश्चित तौर पर गारन्टी देने वाला हो, अन्यथा हमें कैसे विश्वास आए कि जब हम तेरे दावे को झूठा कर देंगे और तेरे दुर्भाग्य को सिद्ध कर दिखाएंगे तो तेरे फल (इनामी राशि) को प्राप्त कर लेंगे। हे कंगाली के मारे हुए तू धनवान नहीं बल्कि असमर्थ मूर्खों में से है। अत: निर्लज्जा की आदत को छोड़ और माल जमा करा तथा झूठ गढ़ने के मार्गों से पृथक हो जा। बहाने बाज़ी करना छोड़! यदि तू सच्चा और सच का अभिलाषी है तो तुझे शाबाश और यदि तू मुँह फेरने वाला और बहाने तलाशने वाला है तो तुझ पर अफ़सोस है! हमने नसीहत की और नसीहत को चरम सीमा तक पहुंचाया और ऐसे व्यक्ति के समान छान-बीन की जो सत्यनिष्ठ का अभिलाषी है तथा सीधे मार्गों को स्पष्ट करता है और हमने अद्वितीय ख़ुदा के लिए तब्लीग़ (प्रचार) को पूर्णता तक पहुंचाया। अब हम देखते हैं की क्या तू वह (इनामी) राशि जमा करता है और प्रतिज्ञा एवं ईमान का समर्थन करता है या प्रतिज्ञा भंग करने का समर्थन करता और उपद्रवियों के समान शैतान का अनुकरण करता है?

और ख़ुदा की क़सम जो बादलों से वर्षा करता और गुच्छों से फूल निकलता है कि मैं किसी इनाम के लालच के कारण से मुकाबले के लिए नहीं बल्कि कमीनों को अपमानित करने के लिए खड़ा हुआ हूँ ताकि सच स्पष्ट हो जाए और दोषियों का मार्ग भली भांति खुल कर प्रकट हो जाए। निस्सन्देह अल्लाह तआला संयमियों के साथ है और उस ख़ुदा की क़सम जिसने मनुष्य को बुद्धि और समझ से सम्मानित किया, तूने बहुत अप्रिय बात की है और अपने पीछे अपने लिए बदनाम करने वाली याद छोड़ी है। हमने इससे पहले एक विज्ञापन लिखा तथा उसका उत्तर देने वालों के लिए इनाम देने का वादा और ठोस इक़रार किया, परन्तु कोई भी उत्तर देने पर तैयार न हुआ और वह जानवरों तथा चौपायों की भांति खामोश हो गए। उनके होश हवास गुम हो गए और भय से उनके हाथ पैर कांपने लगे तथा शर्म से अपने मुंह के बल गिर पड़े। (शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 36-42)

सम्पादकीय

इस्लाम और देश भक्ति

इस्लाम में देश भक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। अल्लाह के बाद, मुसलमानों को अपने देश और समाज के प्रति वफादार रहने का आदेश दिया जाता है। पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा, "अपने देश से प्रेम करना हर मुसलमान के ईमान का हिस्सा है" (बुखारी) अर्थात जो मुसलमान अपने देश से प्रेम नहीं करता और उसके प्रति वफादार नहीं है उसका ईमान कभी पूरा नहीं हो सकता वह अधूरा ही रहेगा। इस हदीस से स्पष्ट होता है कि इस्लाम में देश भक्ति को महत्वपूर्ण माना जाता है।

इस्लामी दृष्टिकोण से, देश भक्ति का अर्थ केवल अपने देश के प्रति प्रेम और समर्पण नहीं है, बल्कि इसका अर्थ अपने देश के लोगों के प्रति भी जिम्मेदारी और सेवा भाव है। मुसलमानों को अपने देश की सेवा करने और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके लिए उन्हें अपने देश के लोगों के प्रति दयालु और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए।

देश भक्ति के लिए इस्लामी दृष्टिकोण में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:-

- अपने देश के प्रति प्रेम और समर्पण- अपने देश की सेवा करना और उसकी रक्षा करना
-अपने देश के लोगों के प्रति जिम्मेदारी और सेवा भाव
- अपने देश के लिए बलिदान देने की तैयारी

इस प्रकार, इस्लामी दृष्टिकोण से देश भक्ति का अर्थ केवल अपने देश के प्रति प्रेम नहीं है, बल्कि इसका अर्थ अपने देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी और सेवा भाव भी है। मुसलमानों को अपने देश के लिए काम करना चाहिए और उसकी तरक्की में योगदान देना चाहिए।

इसके अलावा, इस्लामी दृष्टिकोण से देश भक्ति का अर्थ यह भी है कि मुसलमानों को अपने देश के लोगों के प्रति न्याय और समानता के साथ व्यवहार करना चाहिए। उन्हें अपने देश के लोगों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए और उनके प्रति दयालु होना चाहिए।

निष्कर्ष में, इस्लामी दृष्टिकोण से देश भक्ति का अर्थ केवल अपने देश के प्रति प्रेम नहीं है, बल्कि इसका अर्थ अपने देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी और सेवा भाव भी है। मुसलमानों को अपने देश की सेवा करनी चाहिए और उसकी तरक्की में योगदान देना चाहिए।

जमात अहमदिया के वर्तमान खलीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अपने एक भाषण में फरमाते हैं:-

"समान्यतया कहने को तो वर्तमान युग में अधिकतर सरकारें प्रजातंत्रीय प्रणाली पर चलती हैं। इसलिए यदि कोई व्यक्ति या गिरोह सरकार को परिवर्तित करने की इच्छा करता है तो वह उचित प्रजातंत्रीय पद्धति को अपनाते हुए ऐसा कर सकता है। मत-पेटियों में अपना वोट डालकर उन्हें अपनी बात पहुंचानी चाहिए। व्यक्तिगत प्राथमिकताओं या व्यक्तिगत हितों के आधार पर वोट नहीं डालने चाहिएं, परन्तु वास्तव में इस्लाम

यह शिक्षा देता है कि किसी भी व्यक्ति के वोट का प्रयोग अपने देश से वफ़ादारी और प्रेम की समझ के साथ होना चाहिए तथा किसी भी व्यक्ति के वोट का प्रयोग देश की भलाई को दृष्टिगत रखते हुए होना चाहिए। अत: किसी भी व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को नहीं देखना चाहिए और यह भी नहीं देखना चाहिए कि किस प्रत्याशी या पार्टी से वह व्यक्तिगत लाभ प्राप्त कर सकता है अपितु एक व्यक्ति को संतुलित ढंग से यह निर्णय करना चाहिए और जिसका वह अनुमान भी लगा सकता है कि कौन सा प्रत्याशी या पार्टी पूरे देश की उन्नति में सहायता देगी। सरकार की कुंजियां एक बड़ी अमानत होती हैं जिसे उस पार्टी के सुपुर्द किया जाना चाहिए जिसके बारे में वोटर ईमानदारी से यह विश्वास करें कि वह सब से अधिक उचित और सब से अधिक योग्य है। यह सच्चा इस्लाम है और यही सच्ची वफ़ादारी है।

वास्तव में पवित्र क़ुर्आन की सूर: संख्या 4 की आयत संख्या 59 में ख़ुदा ने यह आदेश दिया है कि अमानत केवल उस व्यक्ति के सुपुर्द करनी चाहिए जो उस का पात्र हो और लोगों के मध्य निर्णय करते समय उसे न्याय और ईमानदारी से निर्णय करने चाहिएं। अत: अपने देश के प्रति वफ़ादारी यह मांग करती है कि सरकार की शक्ति उन्हें दी जानी चाहिए जो वास्तव में उसके पात्र हों ताकि उनका देश उन्नति कर सके और विश्व के अन्य देशों की तुलना में सबसे आगे हो।

विश्व के बहुत से देशों में हम देखते हैं कि प्रजा सरकार की नीतियों के विरुद्ध हड़तालों और प्रदर्शनों में भाग लेती है। इससे भी बढ़कर तीसरी दुनिया के देशों में प्रदर्शनकारी तोड़-फोड़ करते हैं या उन सम्पत्तियों और जायदादों को हानि पहुंचाते हैं जो या तो सरकार से संबंध रखती हैं या सामान्य नागरिकों की होती हैं। यद्यपि उनका यह दावा होता है कि उनकी यह प्रतिक्रिया देश प्रेम से प्रेरित है, परन्तु वास्तविकता यह है कि ऐसे कार्यों का वफ़ादारी या देश-प्रेम के साथ दूर का भी संबंध नहीं। यह स्मरण रखना चाहिए कि जहां प्रदर्शन और हड़तालें शान्तिपूर्ण ढंग से भी की जाती हैं या अपराध, हानि एवं कठोरता के बिना की जाती हैं फिर भी उनका एक नकारात्मक प्रभाव हो सकता है। इसका कारण यह है कि शान्तिपूर्ण प्रदर्शन भी प्राय: देश की आर्थिक स्थिति की करोड़ों की हानि का कारण बनते हैं। ऐसे कृत्यों को किसी भी दशा में देश से वफ़ादारी का उदाहरण नहीं ठहराया जा सकता। एक सुनहरा सिद्धान्त जिसकी जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक ने शिक्षा दी थी वह यह था कि हमें समस्त परिस्थितियों में ख़ुदा, उसके अवतारों तथा अपने देश के शासकों के प्रति वफादार रहना चाहिए। यही शिक्षा पवित्र क़ुर्आन में दी गई है। अत: उस देश में भी जहां हड़ताल और रोष-प्रदर्शन करने की अनुमति है, वहां इन का संचालन उसी सीमा तक होना चाहिए जिस से देश अथवा देश की आर्थिक स्थिति को कोई हानि न पहुंचे।"

(विश्व संकट तथा शांतिपथ पृष्ठ 40-43)

अत: एक मुसलमान को निश्चित रूप से अपने देश के प्रति वफ़ादार होना चाहिए और एक सच्चा मुसलमान वफ़ादार ही होता है क्योंकि यही इस्लाम की शिक्षा है अगर कोई इसके विपरीत व्यवहार करता है तो वह मुसलमान कहलाने का हक़दार नहीं हो सकता।

☆ ☆ ☆

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 28.6.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

बनू नज़ीर नामक युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

बनू नज़ीर के साथ युद्ध का वर्णन हो रहा था। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. नामक पुस्तक में लिखा है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू नज़ीर के क़िले की ओर रवाना हुए तो आप स. ने अपने पीछे मदीने की आबादी में अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम रज़ि को इमामुस्सलात नियुक्त फ़रमाया तथा ख़ुद सहाबा रज़ि की एक जमाअत के साथ मदीने से निकल कर बनू नज़ीर की बस्ती को घेर लिया जो उस ज़माने की रणनीति के अनुसार क़िले में बन्द हो गए थे। उस अवसर पर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल तथा अन्य मदीने के मुनाफ़िक़ों ने बनू नज़ीर के सरदारों को यह कहला भेजा कि तुम मुसलमानों से कदाचित न दबना, हम तुम्हारा साथ देंगे तथा तुम्हारी तरफ़ से लड़ेंगे। परन्तु जब मूलतः युद्ध आरम्भ हुआ तो मुनाफ़िक़ों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध खुल्लम खुल्ला मैदान में आने का साहस न हुआ तथा न बनू क़ुरैज़ा को साहस हुआ कि मुसलमानों के विरुद्ध मैदान में आकर बनू नज़ीर की सहायता करें।

अतएव बनू नज़ीर मुसलमानों के मुक़ाबले पर नहीं निकले तथा क़िले में बन्द होकर बैठ गए। चूँकि उनके क़िले उस ज़माने के अनुसार बड़े मज़बूत थे इस लिए उनको संतोष था कि मुसलमान उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे और तंग आकर घेराव छोड़ जाएँगे। किन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घेराव जारी रखा। यह घेराव छः दिन और एक रात, तथा एक कथन के अनुसार पन्द्रह दिन तक जारी रहा, बीस तथा तेईस दिनों के कथन भी आए हैं।

कुछ दिन व्यतीत हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़िलों के बाहर खजूरों के वृक्षों में से कुछ वृक्ष को काटने का आदेश दिया। ये लैना नाम की खजूरों के पेड़ थे जो सामान्यत: इंसानों के खाने के काम में नहीं आता थीं। यहुदी इन वृक्षों की आड़ में क़िलों की दीवारों पर चढ़कर तीर और पत्थर बरसा रहे थे इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन वृक्षों को काटने का निर्देश दिया ताकि बनू नज़ीर पर रौब पड़ जाए तथा वे अपने क़िलों के दरवाज़े खोल दें तथा इस प्रकार कुछ वृक्षों को काटने की हानि होने से अनेक इंसानी जानों की क्षति तथा देश में उपद्रव एवं विद्रोह रुक जाए। ऐसा लगता है कि अल्लाह तआला के विशेष इलहाम द्वारा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये वृक्ष काटने का आदेश दिया था। अत: यह युक्ति अपना काम कर गई तथा अभी केवल छ: वृक्ष ही काटे गए थे कि बनू नज़ीर ने सम्भवत: यह सोचकर कि शायद मुसलमान उनके सारे पेड़ जिनमें फलदार वृक्ष भी शामिल थे, काट डालेंगे, रोना पीटना शुरु कर दिया। सामान्य अवस्था में मुसलमानों को शत्रु के फलदार वृक्ष काटने की अनुमति नहीं थी। अतएव बनू नज़ीर ने घबरा कर इस शर्त पर क़िले के द्वार खोल दिए कि हमें यहाँ से अपना सामान लेकर शांति पूर्वक जाने दिया जाए।

यहूदियों की असहाय स्थिति तथा उनकी स्वयं देश से निकल जाने की प्रार्थना करने के बारे में और अधिक इस प्रकार वर्णन है कि मुसलमानों ने इस क़बीले के वृक्ष जलाकर उन्हें और अधिक भयभीत कर दिया। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रौब भर दिया तथा वे हथियार डालने के लिए तय्यार हो गए। उनके देश से निकल जाने के आवेदन पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया कि मदीने से निकल जाओ, तुम्हारे प्राण सुरक्षित रहेंगे, तुम्हारे ऊँट जो सामान उठा सकें वह भी ले जाओ परन्तु किसी हथियार के अतिरिक्त।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाने वालों को देखना चाहिए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझौते को तोडऩे वाले, शासन के मुख्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कई बार मारने का षड्यन्त्र एवं प्रयत्न करने वाले, हथियार बन्द होकर देश द्रोह करने पर आतुर तथा शांति प्रस्ताव को घमंड के साथ ठुकराने वाले इन यहूदियों पर पकड़ बना ली थी, किन्तु इसके बावजूद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शांतिप्रिय स्वभाव, सन्धि, रहमत एवं मानवता से स्नेह की अदभुत शान एवं दया भाव प्रकट होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको यहाँ से अमन व सलामती के साथ चले जाने की आज्ञा दे दी। दया एवं उपकार की भावना की स्थिति यह थी कि यह भी अनुमति दे दी कि हथियारों के अतिरिक्त जो भी सामान ले जाना चाहें, ले जाएँ।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देश से निकल जाने की चार शर्तें रखी थीं। नम्बर एक बनू नज़ीर के यहूदी मदीना मुनव्वरा की सीमा से दूर जहाँ चाहें चले जाएँ। दूसरी यह कि बस्ती से जाते समय यहूदी लोग पूर्णत: हथियार रहित होंगे। तीसरी यह कि जितना सामान वे उठा कर ले जाना चाहें, ले जा सकते हैं। चौथे यह कि यहूदियों के यथासम्भव सामान ले जाने के बाद उनकी शेष

सम्पत्ति एवं सम्पदा के मालिक मुसलमान होंगे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने यहूदियों के बस्ती से निर्वासित होने के विषय में लिखा है कि बनू नज़ीर अपने हाथों से अपने मकानों को तोड़ कर उनके दरवाज़े और चौखटें तथा लकड़ी तक उखेड़ कर अपने साथ ले गए। ये लोग मदीने से उस समारोह एवं धूम-धाम के साथ गाते बजाते हुए निकले कि जैसे एक बारात निकलती है, किन्तु उनकी युद्ध सामग्री तथा चल एवं अचल सम्पत्ति अर्थात बाग़ इत्यादि मुसलमानों के हाथ आए तथा चूँकि यह माल बिन किसी व्यवहारिक युद्ध के मिला था इस लिए इस्लामी शरीअत के अनुसार उसके आवंटन का अधिकार केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में था तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह माल अधिकांशत: निर्धन मुहाजिरों में बांट दिया जिनके जीवन यापन का भार अभी तक उस आरम्भिक बन्धुत्व के बन्धन में बन्धे अन्सार की सम्पत्तियों पर था और इस तरह सीधे सीधे अन्सार भी इस माले ग़नीमत में भागीदार बन गए।

जब बनू नज़ीर मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि की निगरानी में मदीने से निकल रहे थे तो अन्सार ने कुछ लोगों को उनके साथ जाने से रोकना चाहा जो मूलत: अन्सार की संतान में से थे किन्तु अन्सार की मन्नत मानने के परिणाम स्वरूप यहूदी हो चुके थे तथा बनू नज़ीर उनको अपने साथ ले जाना चाहते थे। परन्तु चूँकि अन्सार की यह मांग इस्लाम के आदेश- ला इकराहा फ़िद्दीन, अर्थात दीन में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए, के विरुद्ध था इस लिए आँहज़रत ने मुसलमानों के विरुद्ध तथा यहूदियों के पक्ष में फ़ैसला किया और फ़रमाया कि जो व्यक्ति भी यहूदी है और जाना चाहता है, हम उसे रोक नहीं सकते परन्तु बनू नज़ीर में से दो आदमी स्वयं अपनी इच्छा से मुसलमान होकर मदीने में ठहर गए।

एक रिवायत आती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू नज़ीर के विषय में यह फ़ैसला किया था कि वे शाम देश की ओर चले जाएँ, अर्थात अरब में न ठहरें। परन्तु बावजूद इसके उनके कुछ सरदार उदाहरणत: सलाम बिन अबिल हुक़ीक़, किनाना बिन रबीअ तथा हुब्बयी बिन अख़तब इत्यादि तथा एक भाग साधारण लोगों का भी हिजाज़ के उत्तरी भाग में यहूदियों की प्रसिद्ध बस्ती ख़ैबर में जाकर ठहर गया तथा ख़ैबर वालों ने उनकी बड़ी आवभगत की। ये लोग अन्तत: मुसलानों के विरुद्ध भयानक उपद्रव एवं युद्ध भड़काने का कारण बने। बनू नज़ीर से लड़ाई की नौबत ही नहीं आई थी बल्कि अल्लाह तआला ने नबी का रौब तथा दबदबा उनके दिलों पर डाल दिया था। इस तरह अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी धन सम्पत्ति का वारिस बना दिया।

अन्सार के आश्चर्य जनक तथा उच्च स्तरीय प्रेम एवं बलिदान को अभिव्यक्त करने का उदाहरण भी हमें यहाँ मिलता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने धन बांटते समय हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया कि मेरे सामने अपनी क़ौम के

लोगों को इकट्ठा करो, समस्त अन्सार को बुलाओ। उन्होंने औस तथा खज़रज को बुला लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्सार मुहाजिरों से सुन्दर व्यवहार का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यदि तुम चाहो तो बनू नज़ीर से प्राप्त माल-ए-फै (बिना युद्ध के हाथ आई धन सम्पत्ति) तुम्हारे तथा मुहाजिरों के बीच बाँट दिया जाए। इस अवस्था में मुहाजिर तुम्हारे घरों पर क़बज़ा जमाए तथा तुम्हारे धन के मालिक रहेंगे और यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं माल-ए-फै मुहाजिरों में बाँट दूँ, इस अवस्था में वे तुम्हारे दिए हुए घरों से निकल जाएँगे। इस पर हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि और हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि ने निवेदन किया कि हमारी धन सम्पत्ति इनके पास ही रहने दीजिए तथा बनू नज़ीर की समस्त धन सम्पत्ति भी हमारे मुहाजिर भाइयों को दे दीजिए। मुहाजिरों में से आवाज़ें आने लगीं कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम इस पर ख़ुश हैं तथा हम इसको स्वीकार करते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बलिदान एवं क़ुर्बानी की भावना को देख कर अत्यंत प्रसन्न हुए और फ़रमाया- ऐ अल्लाह! अन्सार पर तथा उनकी संतानों पर रहम फ़रमा।

यहाँ बनू नज़ीर नामक युद्ध का वर्णन पूरा हुआ, आगे इन्शाअल्लाह अन्य युद्धों का वर्णन होगा।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने पाकिस्तान के अहमदियों, पाकिस्तान में सार्वजनिक शांति एवं सुरक्षा की स्थिति, पूरे विश्व के मुसलमानों तथा दुनिया के सामान्य हालात के लिए दुआओं की तहरीक फ़रमाई।

ख़ुत्बः सानिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व
(लेखक- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए रज़िअल्लाहु अन्हो)

फिर क़ुर्आन करीम ही नहीं अपितु हदीस भी स्पष्ट शब्दों में बता रही है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा। नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ

(बुख़ारी किताब बदउलख़ल्क)

"अर्थात् क्या ही अच्छा हाल होगा तुम्हारा हे मुसलमानो! जब मसीह इब्ने मरयम तुम में उतरेंगे और वह इमाम होंगे तुम्हारे, तुम्हीं में से।"★

यह हदीस स्पष्ट शब्दों में और किसी व्याख्यायोग्य शब्द की आवश्यकता के बिना बता रही है कि मसीह मौऊद मुसलमानों में से ही एक व्यक्ति होगा जो मुसलमानों का इमाम होगा, जैसा कि 'इमामोकुम मिन्कुम' के शब्द निश्चित तौर पर प्रकट कर रहे हैं। नि:संदेह आने वाले को इब्ने मरयम के नाम से याद किया गया है, परन्तु मिन्कुम का शब्द ऊँचे स्वर में पुकार-पुकार कर कह रहा है कि यह इब्ने मरयम वह नहीं जो पहले गुज़र चुका अपितु हे मुसलमानो! यह तुम में से ही एक व्यक्ति होगा। यदि कथित मसीह पूर्व आ चुका मसीह नासिरी ही है तो **मिन्कुम** के क्या अर्थ हुए? ख़ुदा के लिए शीतल हृदय से विचार करो कि क्या **मिन्कुम** का शब्द मसीह नासिरी के बारे में समस्त आशाओं पर पानी नहीं फेर देता? यह मैं आगे चल कर बताऊँगा कि मसीह इब्ने मरयम के शब्दों का प्रयोग करने में क्या नीति थी, परन्तु इस समय दर्शक इतना देखें कि क्या **मिन्कुम** के शब्द ने इस्राईली मसीह के आगमन की आस्था को समूल काट कर नहीं रख दिया? मैं हैरत और आश्चर्य में डूब जाता हूँ जब देखता हूँ कि लोग तो भलाई को अपनी ओर सम्बद्ध करने के इतने जिज्ञासु होते हैं कि जिस वस्तु का उन्हें अधिकार ही नहीं उसे भी अपनी ओर सम्बद्ध करने से

★कुछ लोग इस हदीस के ये अर्थ करते हैं कि शब्द اِمَامُكُم منكم मसीह के बारे में नहीं है अपितु महदी के बारे में हैं जो मसीह के युग में अवतरित होगा और मुसलमानों का इमाम होगा, परन्तु बात यह है कि हम ने हदीस सही बुख़ारी से ली है, जिसमें महदी के प्रकटन का कोई अध्याय ही नहीं रखा गया, जिसका कारण यह है कि महदी के बारे में हदीसों में ऐसी गड़बड़ और ऐसा मतभेद है कि किसी हदीस के बारे में पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता कि वह सही है। अत: अब यहि इस हदीस में اِمَامُكُم منكم के शब्द महदी के बारे में होते तो आवश्यक था कि इमाम बुख़ारी रह. जो हदीस से आचार्यों के सब से बड़े इमाम हैं वह महदी का अध्याय स्थापित करके इस हदीस को महदी के उतरने के सन्दर्भ में भी वर्णन करते, परन्तु वह यह हदीस केवल मसीह के सन्दर्भ में लाए हैं तथा महदी की चर्चा तक नहीं की, जिस से सष्पट है कि इमाम साहिब ने कभी اِمَامُكُم منكم के शब्दों का संकेत महदी की ओर नहीं समझा क्योंकि यदि वह ऐसा समझते तो वह इस हदीस को महदी के उतने के सबूत में प्रस्तुत करते। यही हाल इमाम मुस्लिम का है, अपितु इमाम मुस्लिम ने तो اِمَامُكُم के स्थान पर اَمَّكُم की रिवायत वर्णन करके निर्णय ही कर दिया है।

नहीं रुकते, परन्तु यह वह क़ौम है कि उसे जो ने'मत ख़ुदा तआला की ओर से प्रदान हुई है उसे भी अपनी ओर सम्बद्ध करना नहीं चाहती। हमारा आक़ा नबियों का सरदार ख़ातमुन्नबिय्यीन सूचना दे रहा है कि हे मुसलमानो! तुम में एक मसीह प्रकट होगा जो तुम्हीं में से तुम्हारा एक इमाम होगा, परन्तु मुसलमान कहते हैं कि भला, यह ने'मत इस उम्मत को कहां प्राप्त होगी। इस उम्मत के भाग्य में तो मसीह नासिरी ही का आना लिखा है मैं दर्शकों की सेवा में निवेदन करता हूँ कि वे इस हदीस के शब्दों पर पुन: विचार करें जो ये हैं:-

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكمْ مِنْكُمْ

अर्थात् "क्या ही अच्छा हाल होगा तुम्हारा हे मुसलमानों जब मसीह इब्ने मरयम तुम में प्रकट होगा और वह तुम्हीं में से तुम्हारा एक इमाम होगा।"

विचार करो कि नबी करीम (स.अ.व.) इस विचार से किस प्रकार प्रसन्न हो रहे हैं कि मेरी उम्मत में से एक इतना महान् मनुष्य प्रकट होगा जो मेरी उम्मत के सौभाग्य का झण्डा बुलन्द करने वाला होगा। न्याय का स्थान है कि इस्राईली मसीह के आने में इस दयनीय उम्मत के लिए कौन सी प्रसन्नता है? वह तो इस उम्मत के लिए शोक का दिन होगा जब कि इसके सुधार के लिए किसी बाह्य व्यक्ति की आवश्यकता होगी, क्योंकि इसके अर्थ ये होंगे कि हमारे आक़ा, नबियों में सर्वश्रेष्ठ (स.अ.व.) की पवित्र शक्ति इस उम्मत में से किसी सुधारक को पैदा न कर सकी। क्या नबी करीम (स.अ.व.) इस बात पर ख़ुशी मना रहे हैं कि जब मेरी उम्मत में उपद्रव और विकार फैलेगा तो मेरी उम्मत के अन्दर कोई व्यक्ति इस योग्य नहीं होगा कि सुधार का कार्य कर सके अपितु ख़ुदा को आवश्यकता होगी कि इस्राईली मसीह को उतारे?

لا حول ولا قوة اِلّا باللّٰہ العظیم

हदीस में दोनों मसीहों के अलग-अलग हुलिया का वर्णन मौजूद हैं

अत: मसीह मौऊद के बारे में 'इमामोकुम मिन्कुम' के शब्द फ़रमा कर नबी करीम (स.अ.व.) ने समस्त विवाद का निर्णय कर दिया है तथा शंका और सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा, परन्तु आपकी सहानुभूति को देखिए कि स्पष्ट शब्दों में बता देने के बावजूद कि मसीह मौऊद मेरी उम्मत में से होगा आप उस समस्या पर केवल यही बात कह कर ख़ामोश नहीं हो गए अपितु अतिरिक्त व्याख्या की है ताकि मसीह नासिरी के बारे में मुसलमानों के हृदयों से उसके दोबारा आगमन का विचार बिल्कुल निकाल दिया जाए। आप (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

رَأَيْتُ عِيسٰى وَ مُوْسٰى وَاِبْرَاهِيْمَ فَاَمَّا عِيْسٰى فَاَحْمَرُ جَعْدٌ عَرِيْضُ الصَّدْرِ وَاَمَّا مُوْسٰى فَاٰدَمُ جَسِيْمٌ سَبْطُ الشَّعْرِ كَاَنَّهٗ مِنْ رِجَالِ الزُّطِّ وَاَمَّا اِبْرَاهِيْمُ فَانْظُرُوْا اِلٰى صَاحِبِكُمْ

(सही बुख़ारी किताब बदउल ख़ल्क़)

अर्थात् "मैंने रोया (स्वप्न) में ईसा, मूसा और इब्राहीम को देखा। ईसा लाल रंग के थे तथा उनके बाल घुंघराले थे और उनका सीना चौड़ा था, मूसा का रंग गेहुंआं था तथा उन का शरीर भारी था और ऐसा

प्रतीत होता था कि जैसे ज़ुत्त क़बीले का कोई व्यक्ति है और इब्राहीम को देखना हो तो केवल मुझे देख लो।"

इस हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) ने ईसा इब्ने मरयम का हुलिया यह वर्णन किया है कि ईसा इब्ने मरयम लाल रंग के थे और उनके बाल घुंघराले थे। इस बात का प्रमाण कि यहां ईसा से अभिप्राय पूर्वकालीन ईसा है स्वयं इस हदीस में मौजूद है और वह यह है कि उनको पूर्वकालीन नबियों हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ मिलाकर वर्णन किया गया है। पाठक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इस हुलिए को भली-भांति याद रखें। इसके मुक़ाबले पर एक अन्य हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं:-

بَيْنَمَا اَنَا نَائِمٌ اَطُوْفُ بِالْكَعْبَةِ فَاِذَا رَجُلٌ سَبْطُ الشَّعْرِ فَقُلْتُ مَنْ هٰذا قَالُوْا هٰذا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ

(सही बुख़ारी बाब ज़िकरुद्दज्जाल)

अर्थात् "मैंने स्वप्न में काबे की परिक्रमा की, अचानक मैंने एक आदमी देखा जिसका रंग गेहुआं था तथा उसके बाल सीधे और लम्बे थे। मैंने पूछा कि यह कौन है? जिस पर मुझे उत्तर दिया गया कि यह मसीह इब्ने मरयम है।"

इस हदीस में नबी करीम (स.अ.व.) आने वाले मसीह का हुलिया (आकृति) यह वर्णन करते हैं कि वह गेहुआं है तथा उसके बाल सीधे और लम्बे हैं। इस बात का प्रमाण कि यहां मसीह से अभिप्राय आने वाला मसीह है स्वयं इसी हदीस में मौजूद है, क्योंकि इसी हदीस में आगे नबी करीम (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि मैंने उस समय दज्जाल को भी देखा। जिस से स्पष्ट है कि यह मसीह वह है जो दज्जाल के मुकाबले पर प्रकट होगा।

अत: बात बिल्कुल स्पष्ट है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जो बनी इस्राईल में अवतरित हुए उन के बारे में आंहज़रत (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि उन का रंग लाल था और बाल घुंघराले थे, परन्तु आने वाला मसीह जो दज्जाल के युग में प्रकट होगा, उसके बारे में आप फ़रमाते हैं, कि उसका रंग गेहुआं है और उसके बाल सीधे और लम्बे होंगे। दोनों हुलियों (आकृतियों) में स्पष्ट अन्तर है किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। कहां लाल रंग और कहां गेहुआं रंग। फिर कहां घुंघराले बाल और कहां सीधे बाल! देखिए नबी करीम (स.अ.व.) ने किस स्पष्टता के साथ बता दिया कि हे मुसलमानो! इब्ने मरयम के शब्द से यह न समझ लेना कि तुम में इस्राईली मसीह ही उतरेंगे क्योंकि उनका रंग लाल था और बाल घुंघराले थे, परन्तु आने वाले मसीह का रंग गेहुआं होगा तथा बाल सीधे और लम्बे होंगे। इस से अधिक स्पष्टता और क्या होगी? दोनों मसीहों का चित्र दर्शकों के समक्ष रख दिया गया है और चित्र भी स्वयं नबी करीम (स.अ.व.) के द्वारा खींचा गया है। अब पाठक स्वयं निर्णय कर लें कि क्या दोनों चित्रों में एक व्यक्ति की शक्ल दिखाई दे रही है? जिसे ख़ुदा ने आँखें दी हैं वह तो दोनों को एक नहीं कह सकता। हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम क्या ख़ूब फ़रमाते हैं:-

मौऊदम व बहुलिया मासूर आमदम
हैफ़ अस्त गर बदीदा न बीनंद मन्ज़रम

रंगम चूं गन्दम अस्त व बमूफ़र्क़ बय्यिन अस्त
ज़इन्सां कि आमद अस्त दर अख़बार सरवरम
ईं मक़दमम न जाए शुकूक अस्त व इलतिबास
सय्यद जुदा कुनद ज़ मसीहा ए अहमरम

अर्थात् "मैं ही वादा दिया गया मसीह हूँ और मैं हदीसों में वर्णित हुलिये के अनुसार आया हूँ। खेद है कि यदि लोग आँख रखते हुए मुझे न देखें। मेरा रंग गेहुआं है और मेरे बालों में भी उस व्यक्ति के बालों से अन्तर है जिसका वर्णन मेरे आक़ा के कथनों में आता है। मेरे इस पद के बारे में किसी शंका और सन्देह की गुंजायश नहीं क्योंकि नबी करीम (स.अ.व.) ने मुझे स्वयं लाल रंग वाले मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम से अलग बताया है।"

आयत اِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ पर एक सरसरी दृष्टि

इस लेख को समाप्त करने से पूर्व एक संक्षिप्त नोट आयत وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا (सूरह ज़ुख़रुफ़) के बारे में उल्लेख करना फाइदे से ख़ाली न होगा क्योंकि अन्य सब ओर से निराश होकर हमारे मौलवी लोग प्राय: इस आयत से हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के क़यामत के निकट के ज़माने में उतरने को सिद्ध किया करते हैं, परन्तु पाठक अभी देखेंगे कि डूबते को तिनके का सहारा कुछ हो तो हो, परन्तु यह आयत उनके उद्देश्य के लिए इतना काम भी नहीं देती। प्रथम तो यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या इस आयत के अर्थों पर समस्त व्याख्याकारों की सहमति है? क्या इस से सब अनिवार्य रूप से यही परिणाम निकालते हैं कि मसीह क़यामत के निकट उतरेगा? देखिए इस आयत में बहुत से व्याख्याकार इस ओर गए हैं कि इन्नहू (اِنَّهٗ) का सर्वनाम क़ुर्आन शरीफ़ की ओर जाता है न कि ईसा की ओर अर्थात् आयत के मूल अर्थ ये हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में क़यामत का सबूत मौजूद है क्योंकि जिस सूरह में यह आयत आई है अर्थात् सूरह 'ज़ुख़रुफ़' इसमें क़ुर्आन शरीफ़ की चर्चा की पुनरावृत्ति है और कई बार اِنَّهٗ का शब्द प्रयोग करके सर्वनाम को क़ुर्आन शरीफ़ की ओर फेरा गया है। इसी लिए बहुत से व्याख्याकारों ने इस सर्वनाम को क़ुर्आन शरीफ़ ही की ओर लौटने वाला स्वीकार किया है। हां कुछ ने 'इन्नहू' के सर्वनाम को नि:सन्देह ईसा की ओर फेरा है परन्तु ऐसे व्याख्याकारों के भी आगे दो वर्ग हो जाते हैं। कुछ तो आयत के ये अर्थ करते हैं कि ईसा क़यामत की निशानी हैं अर्थात् वह क़यामत के निकट उतरेंगे परन्तु कुछ ने ये अर्थ किए हैं कि ईसा क़यामत का एक सबूत हैं अपितु पूर्व कालीन व्याख्याकार तो अलग रहे इस युग के ग़ैर अहमदी विद्वान भी इस आयत के यही अर्थ करते हैं कि हज़रत ईसा का अस्तित्व क़यामत का एक सबूत है। अत: मौलवी नज़ीर अहमद साहिब देहलवी ही का अनुवाद ले लीजिए। मौलवी साहिब इस आयत के ठीक वही अर्थ करते हैं जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है अर्थात् "ईसा अलैहिस्सलाम भी क़यामत का एक सबूत हैं" फिर इस पर मौलवी साहिब एक नोट लिखते है जो निम्नलिखित है, फ़रमाते हैं कि:-

"जो ख़ुदा ईसा अलैहिस्सलाम के बिन बाप पैदा करने पर समर्थ है वह इस बात पर भी समर्थ

है कि क़यामत में मुर्दों को जीवित कर दे या यह मतलब है कि हज़रत ईसा का दोबारा संसार में आना क़यामत के निकट होने का सबूत है जैसा कि हदीसों में आया है।"

देखिए यहां मौलवी नज़ीर अहमद साहिब देहलवी आयत के मूल अर्थ यही करते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम की चमत्कारिक पैदायश क़यामत पर एक सबूत है और यद्यपि उन्होंने दूसरे अर्थ भी वर्णन किए हैं परन्तु प्रमुखता उन्हीं अर्थों को दी है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का अस्तित्व क़यामत का एक सबूत है, जिस से स्पष्ट है कि उनके निकट अधिक स्वीकार करने योग्य यही अर्थ थे। फिर कुछ व्याख्याकारों ने इन्नहू के सर्वनाम को मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ओर भी फेरा है।

इन परिस्थितियों में पाठक स्वयं विचार करें कि क्या यह आयत ऐसी महत्वपूर्ण समस्या के लिए नींव का पत्थर बन सकती है? क्या आप की अन्तर्दृष्टि इस बात को स्वीकार करने को तैयार है कि मसीह के दोबारा अगमन की समस्या का एक ऐसी आयत पर आधार हो जिसमें अधिकांश व्याख्याकारों के निकट मसीह का कहीं नाम तक नहीं, अपितु सर्वनाम क़ुर्आन करीम की ओर लौटता हो? फिर एक अन्य वर्ग के निकट भी आयत में मसीह की चर्चा तक न हो अपितु सर्वनाम मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ओर लौटता हो और केवल एक छोटे वर्ग के विचार में सर्वनाम ईसा अलैहिस्सलाम की ओर फिरता समझा जाए, परन्तु इस विचार के व्याख्याकार भी परस्पर लडऩे पर तैयार हों। कोई कहता हो कि आयत के ये अर्थ हैं कि हज़रत मसीह अपनी चामत्कारिक और विलक्षण पैदायश के कारण क़यामत पर एक सबूत थे और कोई कहे कि नहीं अपितु चूंकि वह क़यामत के निकट उतरेंगे, इसलिए उन्हें क़यामत का सबूत ठहराया गया है।

एक बार देहली में मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भोपालवी ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम के सामने मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम के उतरने के बारे में यही आयत प्रस्तुत की थी। इस पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर दिया वह यह है :-

चौथा सबूत आपने यह प्रस्तुत किया है कि

"अल्लाह तआला फ़रमाता है وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا इस स्थान पर भी आप मान गए हैं कि यह आयत आपके उद्देश्य पर निश्चित सबूत नहीं है परन्तु मैं आप को मात्र ख़ुदा के लिए स्मरण कराता हूँ कि इस आयत का हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के दोबारा उतरने से संदिग्ध तौर पर भी कुछ संबंध नहीं। बात यह है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के समय में यहूदियों में सदूक़ी नामक एक समूह था जो क़यामत का इन्कारी था। पूर्वकालीन किताबों में बतौर भविष्यवाणी उल्लेख था कि उनको समझाने के लिए मसीह अलैहिस्सलाम का जन्म बिना बाप के होगा और उनके लिए यह एक निशान बताया गया था जैसा कि अल्लाह तआला दूसरी आयत में फ़रमाता है यहां पर 'अन्नास' से अभिप्राय वही सदूक़ी समूह है जो उस युग में बाहुल्य के साथ मौजूद था। चूंकि तौरात में क़यामत का वर्णन प्रत्यक्ष तौर पर कहीं विदित नहीं होता। इसलिए यह समूह मुर्दों के जीवित हो उठने से पूर्णत: इन्कारी हो गया था। बाइबल की कुछ पुस्तकों में अब तक उपलब्ध है कि मसीह अपनी पैदायश की दृष्टि से बतौर 'इल्मुस्साअत' के उनके लिए आया

था। अब देखिए इस आयत का मसीह अलैहिस्सलाम के उतरने से क्या संबंध है। आपको ज्ञात है कि व्याख्याकारों ने कितने पृथक-पृथक तौर पर इसके अर्थ लिखे हैं। एक जमाअत ने इन्हू के सर्वनाम को क़ुर्आन करीम की ओर फेर दिया है क्योंकि क़ुर्आन करीम से आध्यात्मिक तौर पर मुर्दे जीवित होते हैं और यदि अकारण ज़बरदस्ती यहां मसीह का उतरना अभिप्राय लिया जाए और वही उतरना उन लोगों के लिए जो आंहज़रत (स.अ.व.) के युग में थे क़यामत का निशान ठहराया जाए तो यह तर्क क़यामत के आने तक उपहास योग्य होगा और जिन्हें यह सम्बोधन किया गया कि मसीह अन्तिम युग में उतर कर क़यामत का निशान ठहरेगा। तुम इतने बड़े निशान के बावजूद क़यामत के क्यों इन्कारी हुए। वे बहाना प्रस्तुत कर सकते हैं कि सबूत तो अभी विद्यमान नहीं फिर यह कहना कितना निरर्थक है कि अब क़यामत के होने पर ईमान ले आओ। सन्देह मत करो हमने क़यामत के आने का सबूत वर्णन कर दिया।" (अलहक़ देहली, पृष्ठ 38-39)

पाठक विचार करें कि निश्चय ही यह कितनी हँसी की बात है कि जो वस्तु भविष्य के किसी युग में होगी उसे उन लोगों के लिए सबूत ठहराया जाए जो अब मौजूद हैं। मसीह ने तो भविष्य के किसी युग में उतरना था परन्तु उसके उतरने को नबी करीम (स.अ.व.)के युग के इन्कार करने वालों के सामने बतौर सबूत के प्रस्तुत किया जा रहा है 'नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक' यदि हमारे विरोधी मौलवियों के अर्थ स्वीकार किए जाएं तो नऊज़ुबिल्लाह क़ुर्आन करीम सबूतों की दृष्टि से एक नितान्त रद्दी किताब दिखाई देती है। विचार तो कीजिए कि नबी करीम (स.अ.व.) के युग के विरोधियों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि देखो क़यामत के निकट मसीह का दोबारा उतरना क़यामत का एक सबूत है। अत: तुम क़यामत के बारे में किसी सन्देह में न पड़ो! क्या इससे भी अधिक कमज़ोर सबूत कोई होगा? वर्तमान लोगों के लिए तो जो वस्तु हो चुकी हो या उनके जीवन में घटित हो जाने वाली हो उसे किसी आइन्दा घटित होने वाली वस्तु के प्रमाण में प्रस्तुत किया जा सकता है, परन्तु यह सबूत विचित्र है कि देखो तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् अन्तिम युग में मसीह उतरेगा। इसलिए तुम क़यामत के होने में कोई शंका और सन्देह न करो। ख़ुदा तआला की ओर ऐसे व्यर्थ और बेहूदा सबूतों को सम्बद्ध करना सरासर पाप है, परन्तु चौदहवीं सदी के मौलवियों को कौन समझाए?

अध्याय पंचम
(कुछ विविध शंकाओं का निवारण)

इतना लिखने के पश्चात् मैं आदरणीय पाठकों से निवेदक करता हूँ कि वे कृपया विचार करें कि हम ने किस प्रकार क़ुर्आन करीम तथा सही हदीसों से सिद्ध कर दिया है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम आकाश की ओर जीवित नहीं उठाए गए अपितु उन का इन्हीं अर्थों में रफ़ा (ऊपर जाना) हुआ जिन अर्थों में ख़ुदा के समस्त मान्य लोगों का रफ़ा हुआ करता है। फिर यही नहीं अपितु यह भी प्रकाशमान दिन की तरह सिद्ध कर दिया कि क़ुर्आन करीम और हदीसें पुकार-पुकार कर गवाही दे रहे हैं कि

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम मर चुका है तथा जो व्यक्ति मृत्यु पा जाता है ख़ुदा का नियम उसके जीवित होकर संसार में वापस आने को निषिद्ध ठहराता है। फिर इसी पर अन्त नहीं अपितु ख़ुदा की वाणी और आंहज़रत (स.अ.व.) के कथनों से आपको स्पष्ट तौर पर दिखा दिया गया है कि नबी करीम (स.अ.व.) के समस्त ख़लीफ़े इसी उम्मत में से होंगे अपितु मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए विशेष तौर पर आपके सामने इमामोकुम मिन्कुम (اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ) के शब्द निकाल कर रख दिए गए और अन्तत: आपकी पूर्ण सन्तुष्टि के लिए हमने आपके सामने ख़ातमुन्नबिय्यीन के द्वारा खींचे गए दोनों मसीहों के चित्र भी पृथक-पृथक रख दिए, इस से अधिक हम क्या कर सकते हैं? मैं अपने बुद्धिमान पाठकों पर सरासर अन्याय करने वाला हूँगा यदि मैं यह विचार करूँ कि इन महत्वपूर्ण साक्ष्यों के होते हुए उनके हृदय में एक पल के लिए भी यह विचार आ सकता है कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम जीवित आकाश पर बैठे हैं तथा किसी युग में पुन: पृथ्वी पर उतरेंगे? हां अब उनके हृदय में यह चिन्ता उत्पन्न होना एक स्वाभाविक बात है कि जब क़ुर्आन करीम, हदीसें और सहाबा रज़ियल्लाह के कथन इस स्पष्टता से मसीह पर फ़ातिहा पढ़ रहे हैं तो सम्पूर्ण उम्मत इतनी सदियों से मसीह अलैहिस्सलाम को क्यों जीवित मानती चली आई है?

हज़रत मसीह के जीवित रहने की आस्था पर <u>उम्मत-ए-मुहम्मदिया की सर्वसम्मति कभी नहीं हुई</u>

इस का उत्तर यह है कि यह बिल्कुल ग़लत है कि इस आस्था पर सम्पूर्ण उम्मत की सर्वसम्मति रही है। पूर्वकालीन सदात्माओं में से ऐसे अधिकांश लोग गुज़रे हैं जिन्होंने मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु का इक़रार किया है। क्या आप को स्मरण नहीं रहा कि जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि सब से प्रथम सर्वसम्मति जो आंहज़रत के मृत्योपरान्त सहाबा रज़ियल्लाह की हुई वह इसी बात पर थी कि आंहज़रत (स.अ.व.) से पूर्व जितने नबी हुए वे सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। फिर हज़रत इब्ने अब्बास ने मुतवफ़्फ़ीका के अर्थ मुमीतोका वर्णन करके अपनी आस्था को प्रकट कर दिया तथा इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने इसे अपनी सही बुख़ारी में लिखकर इस पर अपनी मुहर लगा दी। फिर मज्मउल-बिहार में लिखा है:-

وَالْاَكْثَرُ اَنَّ عِيْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ لَمْ يَمُتْ وَقَالَ مَالِكٌ مَاتَ

अर्थात् "अधिकांश लोगों का विचार है कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु नहीं हुई, परन्तु इमाम मालिक रह. फ़रमाते हैं कि वह मृत्यु पा चुके हैं।"

फिर इमाम इब्ने हज़म के बारे में लिखा है कि:-

وَتَمَسَّكَ ابْنُ حَزَمَ بِظَاهِرِ الْاٰيَة وَقَالَ بِمَوْتِهٖ

अर्थात् "इब्ने हज़म ने प्रत्यक्ष आयत लेकर मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु वर्णन की है।"

फिर हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रह. फ़रमाते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम का दूसरा उतरना प्रतिबिम्ब के तौर पर होगा अर्थात् मसीह स्वयं नहीं आएंगे अपितु उनका कोई समरूप आएगा जो उन

के रंग-रूप होगा। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि यह बात बिल्कुल ग़लत है कि उम्मते मुहम्मदिया की इस मिथ्या समस्या पर सर्वसम्मति रही है अपितु इस के विपरीत यदि कोई बात सिद्ध होती है तो वह यह है कि यदि उम्मत की किसी समस्या पर कभी सर्वसम्मति हुई है तो वह मसीह की मृत्यु का ही मसअला (समस्या) है जैसा कि आंहज़रत (स.अ.व.) की मृत्यु के पश्चात् सहाबा रज़ियल्लाह की सर्वसम्मति हुई और सहाबा के युग के पश्चात् तो उम्मते मुहम्मदिया बहुलता के साथ सुदूर देशों में फैल गई और प्रसारित हो गई। इसलिए सहाबा के बाद के युग में किसी धार्मिक मामले के संबंध में सर्वसम्मति का दावा कर देना तो आसान है, परन्तु उसे सिद्ध करना असम्भव बातों में से है। इसीलिए इमाम अहमद बिन हम्बल रह. फ़रमाते हैं कि जो सर्वसम्मति का दावा करे वह झूठा है। हां यह बात निसन्देह उचित है कि कई सदियों (शताब्दियों) से मसीह की जीवित रहने की समस्या सामान्यतया लोगों में फैली हुई है, परन्तु मैं कहता हूँ कि किसी ग़लत आस्था का सामान्यतया प्रचलित हो जाना अनुमान से दूर की बात नहीं है। देखिए आजकल मुसलमानों के कम से कम बहत्तर फ़िर्के (समुदाय) हो रहे है और यह सम्भव नहीं कि वे सब अपनी आस्थाओं में सही हों। यदि सही हैं तो मतभेद कैसा। यह मतभेद स्पष्ट करता है कि मुसलमानों के अन्दर कुछ ग़लत आस्थाएं आ गई हैं। अब पाठक बताएं कि वे ग़लत आस्थाएं कहां से आ गईं? क़ुर्आन करीम और हदीस ने तो नि:सन्देह सही आस्थाएं ही वर्णन की होंगी, फिर उन के होते हुए ग़लत आस्थाएं कैसे सम्मिलित हो गईं? जो उत्तर आप देंगे वही हमारी ओर से समझ लीजिए, परन्तु मैं केवल आरोप का उत्तर देकर आपको ख़ामोश करना नहीं चाहता अपितु मेरी इच्छा तो यह है कि किसी प्रकार आपकी सन्तुष्टि हो। इसलिए सुनिए !

★ ★ ★

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

मुसलमान को काफिर कहने वालों को जवाब

अनुवादक- डॉ अंसार अहमद

लेख का यह भाग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अहमदिया मुस्लिम जमात के संस्थापाक द्वारा लिखित पुस्तक **आईना कमालात-ए-इस्लाम** से उद्धरित है **:**

भूमिका

थोड़ा समय हुआ कि इस विनीत ने ख़ुदा तआला से सामर्थ्य पाकर इस्लाम के समर्थन में तीन तीन पुस्तकें लिखी थीं, जिनमें से पहली पुस्तक का नाम 'फ़तह इस्लाम', दूसरी पुस्तक का नाम "**तौज़ीह मराम**" तथा तीसरी का नाम "**इज़ाला औहाम**" है। इन पुस्तकों में ख़ुदा के इशारे और इल्हाम के अनुसार उस मसीले मसीह के पद की भी चर्चा थी जो इस विनीत को प्रदान किया गया। इसी प्रकार उन बारीकियों तथा उच्च अध्यात्म ज्ञानों का वर्णन था जो इस्लाम और पवित्र क़ुर्आन की उच्च एवं श्रेष्ठतम वास्तविकताएं तथा मुसलमानों के लिए विरोधियों की तुलना में गर्व का स्थान रखती थीं। इसके अतिरिक्त इस्लामी एकेश्वरवाद के श्रेष्ठतम स्थान की सुन्दरता एवं स्पष्टता उन वास्तविकताओं से प्रकट होती थी तथा वे समस्त अध्यात्म ज्ञान उन बाह्य प्रहारों के संतोषजनक एवं पर्याप्त उत्तर थे जो वर्तमान युग के लोग सर्वथा अपने पक्षपात तथा बुद्धि की कमी के कारण इस्लामी शिक्षा पर करते हैं, और यह सब कुछ पवित्र क़ुर्आन तथा सही हदीसों से लिया गया था तथा उन सच्चाइयों पर पूर्व उलेमा (विद्वानों) की गवाहियाँ भी मौजूद थीं और आशा थी कि बुद्धिमान लोग इन पुस्तकों को कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देखेंगे और ख़ुदा के दरबार में कृतज्ञता एवं धन्यवाद के साथ सज्दे करेंगे कि यथासमय अल्लाह तआला ने ये नेमतें प्रदान कीं। किन्तु खेद कि कुछ उलेमा के फ़ित्ने फैलाने के कारण परिणाम विपरीत हुआ और ख़ुदा तआला का धन्यवाद करने के स्थान पर कृतघ्नता का एक ऐसा शोर और कोलाहल मचाया गया कि वे समस्त वास्तविकताएं, सच्चाइयां, रहस्य और अध्यात्म ज्ञान कुफ़्र की बातें ठहरा दी गईं तथा इसी कारण से इस विनीत का नाम भी, काफ़िर, नास्तिक, अधर्मी और दज्जाल रखा गया। अपितु संसार के समस्त काफ़िरों एवं दज्जालों से अधिक निकृष्ट ठहरा दिया गया। इस उपद्रव फैलाने के मूल कर्ताधर्ता एक मुहम्मद हुसैन नामक शैख हैं जो बटाला ज़िला गुरदासपुर में रहते हैं और मानो वर्तमान युग के अधिकांश मुल्ला काफ़िर ठहराने में बहुत जल्दबाज़ हैं तथा इस से पूर्व कि वे किसी कथन या बात के मर्म या तह तक पहुंचें उसके कहने वाले को काफ़िर ठहरा देते हैं। कथित शैख साहिब में दूसरों की तुलना में यह आदत कुछ अधिक बढ़ी हुई प्रतीत होती है और अब तक हम पर जो सिद्ध हुआ है वह यही है कि जन्म से शैख साहिब के स्वभाव को सोच-विचार एवं सद्भावना का बहुत कम भाग प्राप्त हुआ है। यही कारण है कि सर्वप्रथम फ़त्वे का काग़ज़ हाथ में लेकर चारों ओर यही महानुभाव दौड़े अत: सर्वप्रथम काफ़िर और मुर्तद ठहराने में मियां नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी ने कलम उठाई और बटालवी साहिब के फ़त्वे को अपनी

कुफ्र की गवाही से सुशोभित किया और मियां नज़ीर हुसैन ने इस विनीत को अविलम्ब बिना सोचे-समझे काफ़िर ठहरा दिया। इसके बावजूद कि मैं इस से पूर्व उनकी ओर स्पष्ट लिख चुका था कि मैं इस्लाम की किसी सर्वसम्मत आस्था से विमुख नहीं हूं। इसके बहुत से कारणों में से एक कारण यह भी है कि कथित मियां साहिब अब वृद्धावस्था की उस आयु को पहुंच चुके हैं कि वे अपनी सुध-बुध खो चुके हैं तथा क्रोध की अधिकता तथा आक्रोश के अतिरिक्त उनमें सोच-विचार की कोई उत्तम शक्ति शेष नहीं रही अपितु यदि मैं ग़लती नहीं करता तो मेरे विचार में बहुत वृद्ध होने के कारण उनके होश एवं चेतना शक्ति भी विकृत होने के निकट हैं। इसके अतिरिक्त मुझे प्रतीत होता है कि वह आरंभ से ही एक निम्न स्तर की सोच रखने वाले व्यक्ति हैं तथा उनका स्वभाव ही कुछ ऐसा बना है कि उच्च वास्तविकताओं तथा बारीक अध्यात्म ज्ञानों से उनके स्वभाव में कुछ अनुकूलता नहीं। अत: फ़त्वा देने के मूल प्रवर्तक (कर्ता-धर्ता) बतालवी साहिब तथा काफ़िर कहने वाले प्रथम व्यक्ति मियां नज़ीर हुसैन साहिब हैं और शेष समस्त उनके अनुयायी हैं जो प्राय: बटालवी साहिब की तसल्ली और देहलवी साहिब की शिष्यता का सम्मान करते हुए उनके पदचिन्हों पर चलते गए। यों तो इन उलेमा का किसी को काफ़िर ठहराना कोई नई बात नहीं। यह आदत तो इस गिरोह में विशेष तौर पर इस युग में बहुत उन्नति कर गई है तथा एक समुदाय दूसरे समुदाय को धर्म से बहिष्कृत कर रहा है किन्तु यदि खेद है तो मात्र इतना कि ऐसे फ़त्वे केवल विवेचनात्मक ग़लती ही के कारण आरोप योग्य नहीं अपितु बात-बात में ईमानदारी और संयम के विपरीत देखने में आता है तथा अभिमानपूर्ण ईर्ष्याओं को हृदय में रखकर धार्मिक बातों की शैली में उसको व्यक्त किया जाता है। क्या आश्चर्य का स्थान नहीं कि ऐसे संवेदनशील मामले में काफ़िर ठहराने में इतनी अधिक उद्दण्डता दिखाई जाए कि एक व्यक्ति बार-बार स्वयं अपने इस्लाम का इक़रार करता है और उन आरोपों से स्वयं को बरी प्रकट कर रहा है जो काफ़िर होने का कारण ठहराए गए हैं परन्तु फिर भी उसको काफ़िर ठहराया जाता है और लोगों को सख़्ती के साथ कहा जाता है कि कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह तथा एकेश्वरवाद एवं इस्लाम की आवश्यक आस्थाओं, नमाज़, रोज़े की पाबन्दी तथा अहले क़िब्ल: होने के बावजूद फिर भी काफ़िर है और अन्य मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) और काफ़िरों की भांति सदैव नर्क में रहेगा और कभी नर्क से बाहर नहीं होगा।

ایکہ دجّالم بچشمت نیز ضال	چوں نترسی از خدائے ذوالجلال
مومنے رانام کافرمے نہی	کافرم گر مومنی باایں خیال

अनुवाद : हे वह इंसान कि जिसकी नज़र में मैं दज्जाल और गुमराह हूँ तू प्रतापी ख़ुदा से क्यों नहीं डरता। तू मोमिन का नाम काफिर रखता है, अगर तू इस अक़ीदा के बावजूद मोमिन है तो मैं सच-मुच काफिर हूँ। अनुवादक

और सामान्यत: समस्त कुफ्र का फ़त्वा लगाने वाले उलेमा पर यह खेद है कि उन्होंने बटालवी साहिब के कुफ्रनाम: पर बिना सोचे समझे मुहरें लगा दीं और आदि से अन्त तक मेरी पुस्तकें न देखीं तथा

पत्राचार द्वारा मुझ से कुछ न पूछा। यदि वे शुभ नीयत के साथ मुहरें लगाते तो उन का हार्दिक प्रकाश उनको अवश्य इस बात की ओर विवश करता कि प्रथम मुझ से पूछते तथा मेरे शब्दों को हल करने के अर्थ भी मुझ से ही पूछते। फिर यदि इस जांच-पड़ताल के पश्चात् वे शब्द वास्तव में कुफ़्र के वाक्य ही सिद्ध होते तो एक भाई के बारे में हार्दिक खेद के साथ कुफ़्र की साक्ष्य लिख देते। यदि वे ऐसा करते और जल्दबाज़ी से काम न लेते तो उन आरोपों से बरी ठहरते जो एक काफ़िर कहने वाले जल्दबाज़ पर लागू हो सकते हैं, किन्तु खेद कि उन्होंने ऐसा नहीं किया अपितु जैसे एक भेड़ दूसरी भेड़ के पीछे चली जाती है और जो कुछ वह खाने लगती है उसी पर यह भी दांत मारती है। इस काफ़िर कहने में यही आचरण हमारे कुछ उलेमा ने भी धारण कर लिया। فَمَا أَشْكُو إِلَّا إِلَى اللهِ (मैं इसकी शिकायत ख़ुदा के अतिरिक्त किसी से नहीं करता) इस बात को कौन नहीं जानता कि एक एकेश्वरवादी मुसलमान अहले क़िब्ल: को काफ़िर कह देना नितान्त संवेदनशील मामला है, विशेषत: जबकि वह मुसलमान बहुधा अपने लेखों एवं भाषणों में व्यक्त करे कि मैं मुसलमान हूं तथा अल्लाह और रसूल और महा वैभवशाली ख़ुदा के फ़रिश्ते उसकी किताबों, उसके रसूलों तथा मृत्यु के पश्चात् उठाए जाने पर उसी प्रकार ईमान लाता हूं जैसा कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी शिक्षा में व्यक्त किया है और न केवल यही अपितु नमाज़, रोज़ा के उन समस्त आदेशों का पालन करने वाला भी हूं जो अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किए हैं। ऐसे मुसलमान को काफ़िर ठहराना तथा उस का नाम सबसे बड़ा काफ़िर और दज्जाल रखना क्या यह उन लोगों का काम है जिन का आचरण संयम, चरित्र में ख़ुदा का भय और स्वभाव में सद्भावना हो। यद्यपि जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूं यह बात तो सत्य है कि सदैव से उलेमा का यही आचरण रहा है कि प्रकाण्ड विद्वानों, बुज़ुर्गों और समय के इमामों की पुस्तकों की जब कुछ वास्तविकताएं, अध्यात्म ज्ञान, बारीकियां एवं उच्च रहस्यों को वे नहीं समझ सके तथा उनके विचार में वे बातें ख़ुदा की किताब और नबियों के आचरण के विपरीत पाई गईं तो कुछ उलेमा ने उन प्रकाण्ड विद्वानों एवं बुज़ुर्गों और इमामों को इस्लाम के दायरे से बाहर कर दिया तथा कुछ उलेमा ने नर्मी करते हुए काफ़िर तो न कहा किन्तु अहले सुन्नत वल जमाअत से बाहर कर दिया। फिर जब वह युग गुज़र गया और दूसरी शताब्दी के उलेमा पैदा हुए तो ख़ुदा तआला ने उन बाद में आने वाले उलेमा के सीनों एवं हृदयों को खोल दिया और उनको वे बारीक बातें समझा दीं जो पहलों ने नहीं समझी थीं। तब उन्होंने उन पहले महान बुज़ुर्गों और इमामों को उन कुफ़्र के फ़त्वों से बरी कर दिया और न केवल बरी कर दिया अपितु उनके क़ुतुब, ग़ौस तथा वली होने की उच्चतम श्रेणियों को मानने भी लगे और इसी प्रकार उलेमा का स्वभाव रहा तथा उनमें से ऐसे भाग्यशाली बहुत ही कम निकले जिन्होंने ख़ुदा के मान्य लोगों को समय पर स्वीकार कर लिया। इमामे-कामिल हुसैन[रज़ि०] से लेकर हमारे इस युग तक यही चरित्र और आचरण इन ज़ाहिर परस्त ज्ञान के दावेदारों का चला आया है कि इन्होंने समय पर किसी ख़ुदा के मान्य पुरुष को स्वीकार नहीं किया। ख़ुदा तआला ने यहूदियों के बारे में पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया था कि :

اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ (अलबक़रह - 88)

अर्थात् हे बनी इस्राईल! क्या तुम्हारी यह आदत हो गई है कि प्रत्येक रसूल जो तुम्हारे पास आया तो तुम ने उनमें से कुछ को झुठलाया तथा कुछ को क़त्ल कर दिया। यही आदत इस्लाम के उलेमा ने अपना ली ताकि यहूदियों से पूर्णरूप से एकरूपता पैदा करें। अत: उन्होंने नक़ल करने में कुछ अन्तर नहीं रखा तथा अवश्य था कि ऐसा होता ताकि वे सब बातें पूरी हो जाएं जो प्रारंभ से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस एकरूपता एवं समानता के बारे में कही थीं। हां उलेमा ने ख़ुदा के मान्य पुरुषों को स्वीकार भी किया और बड़ी श्रद्धा भी व्यक्त की, यहां तक कि उनकी जमाअत में भी सम्मिलित हो गए किन्तु उस समय जब कि वे इस नश्वर संसार से गुज़र गए और जब कि करोड़ों ख़ुदा के बन्दों पर उनकी मान्यता प्रकट हो गई। कहने वाले ने ख़ुदा के लिए क्या खूब कहा है –

जब मर गए तो आए हमारे मज़ार पर
पत्थर पड़ें सनम तेरे ऐसे प्यार पर

और मेरी हालत को ख़ुदा तआला भली भांति जानता है उसने मुझ पर पूर्णरूप से अपनी बरकतें उतारी हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में एक अगाढ़ प्रेम का स्वभाव प्रदान कर मुझे भेजा है ताकि लोगों को वास्तविक अनुकरण के मार्गों की शिक्षा दूं तथा उन्हें उस ज्ञान और कर्म रूपी अंधकार से बाहर निकालूं जो ध्यान की कमी के कारण उन पर छा रही है। मैं इस बात का दावा नहीं करता कि मेरी रूह में कुछ प्राप्त किए हुए ज्ञानों की कुछ अधिक पूंजी है अपितु मैं अपनी मूर्खता एवं योग्यता की कमी का सर्वप्रथम इक़रार करता हूं, किन्तु इसके साथ ही मैं इस इक़रार को भी गुप्त नहीं रख सकता कि मुझ जैसे अधम और नीच और अनपढ़ को अल्लाह तआला ने अपने प्रशिक्षण के आंचल में ले लिया तथा उन सच्ची वास्तविकताओं और पूर्ण अध्यात्म ज्ञानों से मुझे अवगत कर दिया कि यदि मैं सदैव समस्त सोच-विचार करने वालों से अधिक सोच-विचार करता रहता और इसके साथ एक लम्बी आयु भी पाता तब भी उन वास्तविकताओं एवं अध्यात्म ज्ञानों तक कदापि न पहुंच सकता। मैं उस दयालु स्वामी का इस कारण भी कृतज्ञ हूं कि उसने मुझे इस्लाम के प्रचार में इतना अधिक ईमान का जोश प्रदान किया है कि यदि इस मार्ग में अपने प्राण भी बलिदान करने पड़े तो मुझ पर यह कार्य ख़ुदा की कृपा से कुछ भारी नहीं यद्यपि मैं इस संसार के लोगों से समस्त आशाएं समाप्त कर चुका हूँ। किन्तु ख़ुदा तआला पर मेरी आशाएं अत्यन्त सुदृढ़ हैं। अत: मैं जानता हूं कि यद्यपि मै अकेला हूं परन्तु फिर भी मैं अकेला नहीं, वह दयालु स्वामी (ख़ुदा) मेरे साथ है और उस से अधिक कोई मुझ से निकट नहीं। उसी की कृपा से मुझे यह प्रेम करने वाली रूह प्राप्त हुई है कि कष्ट उठा कर भी उसके धर्म के लिए सेवा करूं तथा इस्लामी विशेष कार्यों को पूर्ण रुचि और लगन के साथ पूर्ण करूं। इस कार्य पर ख़ुदा ने मुझे स्वयं नियुक्त किया है अब किसी के कहने से मैं रुक नहीं सकता और न नऊज़ुबिल्लाह उसके इल्हामी आदेशों को तिरस्कार की दृष्टि से देख सकता हूँ। अपितु उन पवित्र आदेशों का अत्यन्त सम्मान करता हूं और यही इच्छा है कि सम्पूर्ण जीवन इसी सेवा में व्यय हो। वास्तव में प्रसन्न एवं शुभ जीवन वही जीवन है जो ख़ुदा के धर्म की सेवा और प्रचार में गुज़रे

अन्यथा यदि मनुष्य सम्पूर्ण जगत का भी स्वामी हो जाए तथा इतनी अधिक समृद्धि प्राप्त हो कि ऐश्वर्य के समस्त साधन जो संसार में एक सम्राट के लिए संभव हैं वे सब ऐश्वर्य उसे प्राप्त हों फिर भी वह ऐश्वर्य नहीं अपितु अज़ाब का एक प्रकार है जिस की कड़वाहटें कभी साथ-साथ और कभी बाद में प्रकट होती हैं।

मैं खेद करता हूं कि हमारे अधिकतर उलेमा का ध्यान प्राय: बाह्य, अधम और मोटे विचारों की ओर खिंचा हुआ है और वे उन बारीक वास्तविकताओं को नहीं समझते कि जो दयालु ख़ुदा ने महान पुस्तक में रखी हैं और जो हमारे सरदार, पथ-प्रदर्शक अलैहिस्सलाम ने वर्णन की हैं और न केवल इतना ही अपितु वह ऐसे अध्यात्म ज्ञानी को जो ख़ुदा तआला से विवेकपूर्ण अध्यात्म ज्ञानों का इनाम पाए और उन बारीक रहस्यों को खोले जिन का खोलना (स्पष्ट करना) समय की आवश्यकता ने अनिवार्य कर दिया है, नास्तिक, विधर्मी, अक्षरांतरण करने वाला तथा धर्म से विमुख ठहराते हैं। मैं देख रहा हूं कि वे लोग वास्तविकताओं से प्राय: अज्ञान और केवल भौतिक और अवास्तविक पर सन्तोष करने वाले हैं तथा उनके स्वभाव का उस वास्तविक आनन्द की ओर झुकाव नहीं और न कुछ समरूपता है जो अध्यात्म ज्ञानियों को गूढ़ रहस्यों से अवगत होने पर प्राप्त होती है यद्यपि उन पर पूर्वी मूर्ति पूजा (पूर्वी विचारधारा) का प्रभाव तो जैसा पड़ना चाहिए था तो वह उन पर नहीं पड़ा किन्तु फिर भी उनके हृदयों में भ्रम पूजा की ऐसी मूर्तियां छुपी हुई हैं कि वे वास्तविक क़िब्ले तक पहुंचने के मार्ग में रोक बन रही हैं। मैं पूर्ण विश्वास रखता हूं कि उन मूर्तियों को तोड़ने के लिए ख़ुदा तआला ने इरादा किया है और मैं किसी तर्क से सन्देह नहीं कर सकता कि अब वह समय आ गया है कि उन मूर्तियों को पूर्ण रूप से तोड़ दिया जाए तथा ख़ुदा की उपासना करने वाले लोग खोई हुई वास्तविकताओं को पुन: प्राप्त कर लें। ख़ुदा तआला जो समस्त रहस्यों को जानता है भली भांति जानता है कि ये लोग इस्लामी वास्तविकता से दूर जा पड़े हैं और सच्चाई के मुबारक प्रकाश को उन्होंने त्याग दिया है।

इधर तो आन्तरिक तौर पर यह कठिनाई है जिसका मैंने संक्षिप्त तौर पर वर्णन किया है और विरोधी क़ौमों का क्या हाल वर्णन किया जाए कि वे ऐतराज़ एवं सन्देहों से ऐसे लदे हुए हैं कि जैसे एक वृक्ष किसी फल से लदा होता है। इनके बैर हमारे युग में इस्लाम के बारे में बहुत बढ़ गए हैं और प्रत्येक ने अपनी शक्ति तथा अपनी योग्यतानुसार इस्लाम पर ऐतराज़ करने आरंभ किए हैं। यदि हमारे विरोधियों में से कोई व्यक्ति भौतिक विज्ञान का कुछ ज्ञान रखता है तो वह इसी भौतिक शास्त्रीय ढंग से ऐतराज़ करता है और यह सिद्ध करना चाहता है कि इस्लाम भौतिक शास्त्र की प्रमाणित सच्चाइयों के विपरीत वर्णन करता है और यदि कोई विरोधी तिब्ब और डाक्टरी का कुछ ज्ञान रखता है तो वह उन्हीं अनुसंधानों को सरासर धोखा देने के मार्ग से इस्लाम पर ऐतराज़ करने के लिए प्रस्तुत करता है और इस बात पर बल देता है कि जैसे इस्लाम उन देखे एवं महसूस किए अनुभवों के विपरीत वर्णन कर रहा है जो नवीन अनुसंधानों के द्वारा पूर्णतया सिद्ध हो चुके हैं। इसी प्रकार वर्तमान के खगोल-शास्त्र का जिसको कुछ ज्ञान है वह उसी की दृष्टि से इस्लाम पर ऐतराज़ कर रहा है। अत: जहां तक मैंने मालूम किया है इस्लाम, पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा और हमारे सरदार-व-मौला के बारे में अदूरदर्शी लोगों ने तीन हज़ार के लगभग ऐतराज़ किए हैं।

यद्यपि देखने में इन ऐतराज़ों का एक तूफान पैदा होने से एक उचटती दृष्टि से एक खेद और अफ़सोस पैदा होता है, किन्तु जब ध्यानपूर्वक देखा जाए तो ये ऐतराज़ इस्लाम के लिए हानिप्रद नहीं हैं। अपितु यदि हम स्वयं ही लापरवाही न करें तो इस्लाम की छुपी हुई बारीकियां और सच्चाइयां खुलने के लिए ख़ुदा तआला की दूरदर्शिता ने यह एक माध्यम पैदा कर दिया है ताकि उन नवीन मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) के प्रकाश से जो इस प्रकार से विचार करने वालों पर खुलेंगे और खुल रहे हैं सत्याभिलाषी उन भयावह अंधकारों से बच जाएं और जो इस युग में भिन्न-भिन्न प्रकार की पद्धतियों में प्रकट हो रहे हैं। हां ये ऐतराज़ लापरवाही की स्थिति में बहुत भय का स्थान हैं, और एक गुमराही (पथ भ्रष्टता) का तूफान पैदा करने वाले मालूम होते हैं, और केवल इस्लामी आस्थाओं का याद रखना या पुरानी किताबों को देखना उनसे सुरक्षित रहने के लिए पर्याप्त नहीं। सच्चाई को पहचानने वाले लोग समझते हैं कि इस युग के इन ऐतराज़ों से मुसलमानों पर एक भारी परीक्षा आ गई है, और यदि मुसलमान लोग इस परीक्षा को लापरवाही की दृष्टि से देखेंगे तो आहिस्ता-आहिस्ता उनमें तथा उनकी सन्तान में यह विषाक्त तत्त्व प्रभाव करेगा यहां तक कि विनाश तक पहुंचाएगा। वह ईमान, जो बुरे इरादों और ग़लतियों पर विजय पाता है इर्फ़ान (आध्यात्मिक ज्ञान) के बिना कभी मिल नहीं हो सकता। अत: ऐसे लोग ग़लतियों और कुधारणाओं से कैसे सुरक्षित रह सकते हैं जो पवित्र क़ुर्आन की खूबियों से अपरिचित और बाह्य ऐतराज़ों का निवारण करने से असमर्थ तथा ख़ुदा के कलाम की सच्चाइयों तथा उच्चतम आध्यात्म ज्ञान से इन्कारी हैं, अपितु इस युग में उनका वह खुश्क ईमान बहुत बड़े खतरे में है और किसी छोटी परीक्षा को सहन करने योग्य नहीं है। ख़ुदा तआला पर उसी व्यक्ति का ईमान सुदृढ़ हो सकता है जिसका उसकी किताब पर सुदृढ़ ईमान हो, और उसकी किताब पर तभी ईमान सुदृढ़ हो सकता है जब पुस्तकीय चमत्कारों के बिना कि जो अब आंखों के सामने भी मौजूद नहीं हैं स्वयं अल्लाह तआला का पवित्र कलाम उच्चतम श्रेणी का चमत्कार और मआरिफ़ एवं सच्चाइयों का अपार दरिया दिखाई दे। अत: जो लोग एक लेख के बारे में तो यह आस्था रखते हैं कि उसमें शक्तिमान ख़ुदा की क़ुदरत के ऐसे असंख्य चमत्कार मौजूद हैं कि कोई व्यक्ति चाहे वह कैसा ही फ़िलास्फ़र और दार्शनिक हो उनके जैसा नहीं बना सकता। और एक जौ के बारे में उन को यह विश्वास है कि यदि समस्त संसार के दार्शनिक क़यामत के दिन तक उसके चमत्कार एवं गुप्त विशेषताओं के बारे में सोचें, तब भी निश्चित तौर पर नहीं कह सकते कि उन्होंने वे समस्त विशेषताएं ज्ञात कर ली हैं। किन्तु यही लोग मुसलमान कहला कर और मुसलमानों की सन्तान कहला कर पवित्र क़ुर्आन के बारे में यह विश्वास रखते हैं कि वह मोटे शब्दों तथा सरसरी अर्थों के अतिरिक्त अन्य कोई बारीक वास्तविकता अपने अन्दर नहीं रखता और ख़ुदा के कलाम के भेदों एवं रहस्यों तथा अर्थों को उस सीमा तक समाप्त मान बैठे हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समय तथा तत्कालीन योग्यताओं के अनुसार कहे थे और यह भी जानते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण कथन पूर्ण रूप से इकट्ठे भी नहीं हुए और न यथोचित सुरक्षित रहे, किन्तु इन सब बातों के बावजूद क़ुर्आन के नवीन रहस्यों को ज्ञात करने से पूर्णतया ख़ाली और लापरवाह हैं।

स्मरण रहे कि **नवीन रहस्यों** से हमारा तात्पर्य यह नहीं कि ऐसी बातें पवित्र क़ुर्आन से दिन-प्रतिदिन निकल सकती हैं जो उसकी निश्चित, सुस्पष्ट शरीअत की विरोधी हों अपितु रहस्यों, भेदों तथा बारीकियों से वे कार्य अभिप्राय हैं जो शरीअत की सम्पूर्ण बातों को क़ायम रख कर उनके पूरे-पूरे रूप को प्रकट करते हैं और उनकी पूर्ण वास्तविकता को सामने ले आते हैं, यहां तक कि पुस्तकीय प्रमाणों (उदाहृत प्रमाण) को तर्क संगत करके दिखा देते हैं। इसलिए उन्हें रहस्यों की इस औचित्य के युग में आवश्यकता थी। जहां तक दृष्टि डाल कर देखो ख़ुदा की यही सुन्नत (पद्धति) पाओगे कि ख़ुदा तआला सदैव समय की आवश्यकताओं के अनुसार अपने धर्म की सहायता करता रहा है और जिस प्रकार के प्रकाश को देखने के लिए समय की स्थिति ने स्वाभाविक तौर पर इच्छा की वही प्रकाश अपने कलाम और काम में अपने किसी चुने हुए व्यक्ति के माध्यम से दिखाता रहा है ताकि इस बात का सबूत दे कि उसका कलाम और काम अपूर्ण नहीं और न कमज़ोर और निर्बल है। हज़रत **मूसा** के युग में सांपों के मुकाबले पर सांप की आवश्यकता पड़ी और हज़रत मसीह के मुकाबले पर वैद्यों और जादूगरों के मुकाबले पर रूहानी उपचार को दिखाने की आवश्यकताएं पड़ी। अत: ख़ुदा तआला ने समय की मांग के अनुसार अपने नबियों को सहायता दी और हमारे सरदार-व-अनुकरणीय, नबियों के गौरव सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की आवश्यकताएं वास्तव में किसी एक प्रकार में सीमित न थीं और यह युग भी कोई सीमित युग न था बल्कि ऐसा विशाल था जिसका दामन क़यामत तक फैला हुआ है। इसलिए सामर्थ्यवान एवं दूरदर्शी ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन को असीम विशेषताओं पर आधारित किया और पवित्र क़ुर्आन अपनी उन विशेषताओं के कारण जिन में से भलाई की कोई कमी शेष नहीं रही थी प्रत्येक युग की ख़राबी का पूर्ण रूप से निवारण करता रहा। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में पवित्र क़ुर्आन का बड़ा कार्य ख़ुदा की प्रजा के सिद्धान्तों का सुधार करना था इसलिए उसने सम्पूर्ण संसार को ख़ुदा को पहचानने तथा प्रजा के अधिकारों के स्पष्ट और सीधे सिद्धान्त प्रदान किए और खोई हुई तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्थापित किया तथा संसार के अंधकारमय विचारों के सामने वह दार्शिनिकतापूर्ण, प्रकाशमय तथा उच्च श्रेणी का सरस एवं सुबोध कलाम प्रस्तुत किया जिसने उस समय के समस्त विद्यमान विचारों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और दार्शनिकता, मारिफ़त, सरसता, सुबोधता तथा शक्तिशाली प्रभावों में एक महान चमत्कार दिखाया। फिर ऐसा ही प्रत्येक समय में जब किसी प्रकार का अंधकार जोश में आता गया तो इसी पवित्र कलाम का प्रकाश उस अंधकार का सामना करता रहा, क्योंकि वह पवित्र कलाम (वाणी) एक अनश्वर चमत्कार और विभिन्न युगों के विभिन्न अंधकारों का निवारण करने के लिए अपने अन्दर एक पूर्ण प्रकाश लाया था। इसलिए वह हर प्रकार के अंधकार को अपने प्रकाश की शक्ति द्वारा निवारण करता रहा यहां तक कि वह युग आ गया जिसमें हम हैं और जैसा कि पवित्र क़ुर्आन ने भविष्यवाणी की थी, पृथ्वी ने हमारे युग में वे समस्त अंधकार जो पृथ्वी के अन्दर छुपे थे बाहर रख दिए तथा पथभ्रष्टता, बेईमानी और बुद्धि के दुरुपयोग का एक बड़ा जोश प्रकट हो गया। यह वही टेढ़े स्वभावों का जोश है जिसे दूसरे शब्दों में **दज्जाल** का नाम दिया गया था और ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में ख़बर दी थी कि वह महान और

पूर्ण कलाम (क़ुरआन) इस तूफ़ान पर भी विजयी होगा। इसलिए अवश्य था कि ख़ुदा के कलाम में वह सच्चा फ़ल्सफ़ा (दर्शन) भरा हुआ होता जो वर्तमान के धोखा देने वाले दर्शन (फ़ल्सफ़ा) पर विजयी हो जाता, क्योंकि वह अनश्वर (सदैव के) सुधारों के लिए आया है वह न थकेगा और न असहाय होगा जब तक कि प्रत्येक सौम्य स्वभाव में अपना शासन स्थापित न करे तथा दर्शनशास्त्र का विष खाने वाले उस विषनाशक (तिरयाक़) के प्रतीक्षक थे। अतएव ख़ुदा तआला ने उसको प्रकट कर दिया और अपवित्र तार्किकता का प्रभुत्त्व समाप्त करने के लिए उसने यही चाहा कि क़ुर्आन की तार्किकता का प्रभुत्त्व प्रकट करे और विरोधियों की झूठी तार्किकता को पीस डाले। परन्तु अफ़सोस उन लोगों पर जो समय को नहीं पहचानते। उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं कि मुसलमानों की सन्तान को बाह्य आक्रमणों एवं उपद्रवों के कारण प्रतिदिन कैसे असहनीय कष्ट सामने आ रहे हैं और इस्लाम को दर्शन-शास्त्रीय भ्रमों से कितना आघात पहुंच गया है, यहां तक कि नवशिक्षा प्राप्त मुसलमानों का एक बड़ा भाग इस्लाम से ऐसा दूर जा पड़ा है कि जैसे उसने इस्लाम को त्याग दिया है। इसी प्रकार बहुत से मूर्ख और कम बुद्धि रखने वाले लोग इस्लाम के प्रकाश को त्याग कर ईसाई आस्थाओं के अंधकार में प्रविष्ट हो गए और एक लज्जाजनक आस्था जो अपयश और शर्म का स्थान है ग्रहण कर ली है। इस का यही कारण हुआ कि आधुनिक युग के व्यर्थ ऐतराज़ जो धोखे और मिथ्य तर्कों से भरे हुए थे उनकी अपूर्ण दृष्टि में महत्त्वपूर्ण हुए।

एक बड़ी खराबी यह है कि इस युग के उलेमा कुछ बातों में ईसाइयों इत्यादि को उनकी शिर्क करने वाली शिक्षा पर स्वयं ही सहायता देते हैं। उदाहरणतया वर्तमान ईसाइयों की झूठी आस्थाओं के अनुसार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने का विषय एक ऐसा विषय है कि हज़रत ईसा को ख़ुदा बनाने के लिए मानो ईसाई धर्म का यह स्तंभ है, किन्तु वर्तमान युग के मुसलमान एक ओर तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु और पृथ्वी में दफ़्न हो जाने का इक़रार करके फिर इस बात के भी इक़रारी होकर कि मसीह अब तक जीवित है ईसाइयों के हाथ में अपना एक लिखित इक़रार दे देते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम अपनी विशेषताओं में आम इन्सानों की विशेषताओं अपितु समस्त नबियों की विशेषताओं से पृथक और निराला है क्योंकि जब एक **सर्वश्रेष्ठ इन्सान** जो मसीह अलैहिस्सलाम से छः सौ वर्ष के बाद आया और थोड़ी सी आयु पाकर मृत्यु पा गया और उस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर तेरह सौ वर्ष गुज़र भी गए परन्तु मसीह की अब तक मृत्यु नहीं हुई। तो क्या इस से यही सिद्ध हुआ या कुछ और कि मसीह अलैहिस्सलाम की हालत मानवीय आवश्यकताओं से हटकर है। अतः वर्तमान युग के उलेमा यद्यपि देखने में तो शिर्क की स्थिति से **घृणा** प्रकट करते हैं परन्तु मुश्रिकों को **सहायता देने** में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी और क्रोध वाली बात तो यह है कि अल्लाह तआला तो अपने पवित्र कलाम में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु प्रकट करे और ये लोग अब तक उसे जीवित समझकर इस्लाम के लिए हज़ारों एवं असंख्य फ़ित्ने पैदा कर दें और मसीह को आकाश का हमेशा जीवित रहने और क़ायम रहने वाला तथा नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीन पर मुर्दा ठहराएं। हालांकि मसीह की गवाही पवित्र क़ुर्आन में इस प्रकार से लिखी है कि

مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ (अस्सफ़्फ़ - 61/7)

अर्थात् मैं एक रसूल की ख़ुशखबरी देता हूं जो मेरे बाद अर्थात् मेरे **मरने** के बाद आएगा और उसका नाम अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होगा फिर यदि मसीह अब तक इस शारीरिक अवस्था से गुज़र नहीं गया तो इस से अनिवार्य हो जाता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अब तक **इस संसार** में नहीं आए। क्योंकि क़ुर्आन की **स्पष्ट आयतें** अपने खुले-खुले शब्दों से बता रही है कि मसीह अलैहिस्सलाम जब इस शारीरिक अवस्था से गुज़र जाएगा तब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस **भौतिक** अवस्था में आएंगे। कारण यह कि आने के मुकाबले पर जाना वर्णन किया गया है, और अवश्य है कि आना और जाना एक ही समान हों, अर्थात् एक उस लोक की ओर चला गया और एक उस लोक की ओर से आया। फिर हज़रत मसीह अलैहिस्सालम की मृत्यु के बारे में दूसरी **गवाही** आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ** में स्पष्टतापूर्वक दर्ज है जिसकी आँखें हों देखे। और याद रहे कि आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ** में उसी वादे के पूरा होने की ओर संकेत है जो आयत-

يٰعِيْسٰۤى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ (आले इमरान - 3/56)

में किया गया था और **تَوَفّٰى** के उन अर्थों को समझने के लिए जो अभिप्राय और आशय अल्लाह तआला का है ज़रूरी है कि इन दोनों आयतों के वादा और वादे के पूरा होने को मिलाकर देखा जाए। परन्तु अफ़सोस कि हमारे उलेमा को इस छान-बीन से कुछ सरोकार नहीं। यही **تَوَفّٰى** का शब्द जो पवित्र क़ुर्आन के दो स्थानों में हज़रत मसीह के बारे में दर्ज है ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भी यही शब्द पवित्र क़ुर्आन में मौजूद हैं। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَ اِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ (अर्रअद-13/41)

यदि हमारे उलेमा इस स्थान पर भी **تَوَفّٰى** के अर्थ यही लेते कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी आकाश पर उठाए गए हैं तो हमें उन पर कुछ भी अफ़सोस न होता परन्तु उनकी धृष्टता और गुस्ताखी तो देखो कि **تَوَفّٰى** का शब्द जहां कहीं पवित्र क़ुर्आन में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में आता है तो उस के मायने **मृत्यु के** लेते हैं और फिर जब वही शब्द हज़रत मसीह के लिए आता है तो उस के मायने **ज़िंदा उठाए** जाने के वर्णन करते हैं और कोई उनमें से नहीं देखता कि शब्द तो एक ही है। अंधे की तरह एक दूसरे की बात को मानते जाते हैं, जिस शब्द को ख़ुदा तआला ने पच्चीस बार अपनी पुस्तक पवित्र क़ुर्आन में वर्णन करके स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि उसके अर्थ रूह का क़ब्ज़ करना (निकालना) है न कि कुछ और। अब तक ये लोग उस शब्द के अर्थ मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में कुछ और के और कर जाते हैं। मानो समस्त संसार के लिए **تَوَفّٰى** के अर्थ तो क़ब्ज़ रूह हैं, परन्तु हज़रत इब्ने मरयम के लिए उसके अर्थ जीवित उठा लेना है। यह तरीका शिर्क का समर्थन नहीं तो और क्या है।.... (**आईना कमालात-ए-इस्लाम** पृष्ठ - 44-57)

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل 12)

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

सामान्य ज्ञान (गूगल के माध्यम से)

अग्नि से जुड़े रोचक तथ्य

*आग का आविष्कार दुनिया के महत्वपूर्ण अविष्कारों में से एक माना जाता है। अग्नि का इस्तेमाल खाना बनाने से लेकर यांत्रिक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए किया जाता रहा है। आइए, जानते हैं कि इसके बारे में विज्ञान क्या कहता है।

*आग एक रासायनिक प्रतिक्रिया है, जो प्रकाश और गर्मी उत्पन्न करती है।

*आग जलाने के लिए ईंधन, ऑक्सीजन और गर्मी की आवश्यकता होती है।

*जंगल में आग लगने के दौरान अगर पेड़ के अंदर का पानी जल्दी भाप में बदल जाए, तो पेड़ फट सकता है।

*जंगल में आग लगने के बाद यह 25 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से फैल सकती है और रास्ते में जो कुछ भी आता है उसे नष्ट कर देती है।

*पृथ्वी एकमात्र ज्ञात ग्रह है, जहां आग जल सकती है। इसके अलावा और किसी ग्रह पर पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं है।

*लंदन में 1666 में बहुत भयानक आग लगी थी, जिसे दी ग्रेट फायर ऑफ लंदन के नाम से जाना जाता है। इस आग ने शहर का 80 प्रतिशत हिस्सा नष्ट कर दिया था। इसे गुड बर्न कहा जा सकता है, क्योंकि इस आग में प्लेग महामारी का वायरस भी खत्म हो गया था।

*अग्निशमन (आग बुझाना) वास्तव में पेरिस में 1900 ओलंपिक के दौरान एक खेल था।

*आग की लपटों की तुलना में धुएं के शरीर में जाने से अधिक लोग मर जाते हैं।

*दिन में 1 लाख बार पृथ्वी पर बिजली गिरती है। इस बिजली से आग लगने का जोखिम 20% तक हो सकता है।

ध्वनि से जुड़े रोमांचक तथ्य

*संगीत से लगने वाले डर को मेलोफोबिया कहते हैं।

*ध्वनि 767 मील/घंटा या 1,230 किमी/घंटे की गति से यात्रा करती है।

*हवा की तुलना में ध्वनि, पानी में 4.3 गुना तेज गति से यात्रा करती है।

*पानी में ध्वनि की गति 1,482 मीटर/सेकंड है।

*हवा की कोई आवाज नहीं होती है। यह अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं के कारण ध्वनि पैदा करती है।

*पृथ्वी पर प्राकृतिक और सबसे तेज ध्वनि ज्वालामुखी विस्फोट के कारण पैदा हो सकती है।

*1883 में क्राकोटा नामक ज्वालामुखी विस्फोट दुनिया में सबसे अधिक ध्वनि उत्पन्न करने वाला विस्फोट था। इससे निकली ध्वनि 4 हजार मील की दूरी तक सुनी गई थी।

*ध्वनि को गति करने के लिए माध्यम की जरूरत पड़ती है। धरती पर हवा के माध्यम से ध्वनि तैरती है। जहां हवा न हो वहां आवाज नहीं सुनी जा सकती है।

☆ ☆ ☆